ཀུན་འཛོམ།

कुन्ज़ोम



Society for

Conservation and Promotion of Culture in Lahul and Spiti (Kunzom)

C/O Tobdan, Miyan Behad,, Dhalpur, Kullu- 175 101, Post Box No. 24

Society for Conservation and Promotion of Culture in Lahul & Spiti (Kunzom).
Registered under Societies Registration Act No. Kyelang.210/SCPC dt. 7-12-2000

संस्था के कुछ सीमित उद्देश्य निम्न प्रकार से है:

लाहुल स्पिति तथा इसके साथ–साथ हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्र की भाषा व संस्कृति से सम्बन्धित काम करना, इन के विषय में सामग्री एकत्रित करना तथा इस क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों तथा संस्थाओं और सरकारी विभागों व संस्थाओं से सहयोग व आदान–प्रदान करना।

सदस्य, संस्थापक

1. तोबदन, कुल्लु।
2. कर्नल (रिटायर्ड) प्रेम चन्द, के. सी., एस.एम. वी.एस.एम . (कुल्लू)
3. टशी सन्डुव, मंडी।
4. नवांग नोरबू कुकुजी, केलांग।
5. डा. बनारसी लाल, वाराणसी।
6. डा. रन्धीर मानेपा, केलांग।
7. सोनम होज़ेर, क्वारिंग।
8. अमर सिंह, शिमला।
9. उरज्ञान छैरिंग, कुल्लू।
10. छेरिंग दोर्जे, दिल्ली।

सम्पर्क :
तोबदन,
मुख्य सम्पादक, कुन्ज़ोम,
मियां बेहड़, ढालपुर,
पोस्ट बाक्स 24
कुल्लु–175101 (हि0 प्र0)
रजिस्टर्ड आफिसः गांव तिनो, डा. कोलोंग, जिला लाहुल स्पिति (हि. प्र.)

छायाः सभी चित्र, तोबदन।

मूल्य रू. 30/–

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं! इनमें संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं।

मुख्य संपादक

नारायण आर्ट प्रिंटर्स, मण्डी हि.प्र. फोन 223217 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : तोबदन,

पट्टनी

कर्नल (रिटायर्ड) प्रेमचंद, के.सी.,

एस.एम. वी. एस.एम.

पुनन्

नवांग नोरबू कुकुजी,

तिनन

डा. बनारसी लाल

प्रथम अंक

जनवरी-दिसम्बर, 2005

Society for

CONSERVATION AND PROMOTION OF CULTURE IN LAHUL & SPITI (KUNZOM)

Registered under Socities Registration Act No. Kyelang.210/SCPC dt. 7-12-2000

Published By : Society for Conservation and Promotion of Culture in Lahul & Spiti (Kunzom)

सम्पादकीय

काफी समय से हम यह तीक्ष्ण रूप से अनुभव कर रहे थे कि यद्यपि शीघ्र गति से परिवर्तनशील आधुनिक वातावरण के वेग में अपनी भाषाओं के निरन्तर घटते अस्तित्व को हम रोक नहीं सकते– विकास की बात तो कठिन है–फि भी इस ओर कुछ प्रयास अवश्य किया जा सकता है जिससे कि हम इन भाषाओं के वर्तमान स्वरूप के कुछ नमूने मुद्रित रूप में भविष्य में उत्सुक विद्वानों और पाठकों के उपयोग के लिए सुरक्षित रख सकें। इसके महत्व को सभी अनुभव करते हैं। अतः इस दिशा में हमारा प्रारंम्भिक प्रयास इस पत्रिका के रूप में आपके सम्मुख उपस्थित है।

कुछ विद्वान लेखकों ने ,अपनी मौखिक भाषाओं को लिपिबद्ध करते हुए, अपने सामने, बल्कि सबके सम्मुख कुछ कठिनाईयों का जिक्र किया है, साथ ही इन कठिनाइयों का हल भी उन्होंने स्वयं ही ढूंढा है और उन का सुन्दर उदाहरण हमारे सम्मुख रखा है। वैसे हमारी सब से बड़ी कठिनाई यह है कि हम तीस हज़ार या इससे कुछ अधिक जनसंख्या वाले प्रदेश में कम से कम छः भाषाओं का प्रयोग करते हैं। आज की परिस्थिति में यह अत्यन्त कठिन कार्य है और इसका सीधा प्रभाव भाषा पर ही पड़ता है। दूसरी ओर यही बात भाषा के विषय में हमारी पारम्परिक समृध्दि को भी दर्शाती है। यदि हमने इसको यूं ही लुप्त होने दिया तो इस अमूल्य निधि का मूल्य कौड़ी भर भी नहीं रहेगा। वैसे यह दृश्य हम और थोड़ा ही समय देख पाएंगे।

हमें इस पवित्र कार्य के लिए हर दिशा से भरपूर प्रोत्साहन और सहयोग प्राप्त हुआ है और भविष्य में भी सहयोग का आश्वासन मिला है।

इस पत्र में हम चाहते हैं कि जो भी लेखक जिस भी रूप में अपनी भाषा को प्रस्तुत करना चाहें, करें। उस पर विचार और टिप्पणी भविष्य में कभी भी हो सकती है। हमारा मूल उदेश्य केवल मात्र सामग्री एकत्रित कर सुरक्षित करना है।

इस स्थान पर हम उन सभी सहयोगियों और शुभाचीन्तको का विशेष रूप से विद्वान लेखकों का जिन्होने अपना अंशदान देकर इस शुभ कार्य को सफल बनाया है, का धन्यवाद करते हैं।

हम उन महानुभावों और समृद्ध संस्थाओं के प्रति भी अपनी कृज्ञता यहां व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने हमारी पत्रिका में विज्ञापन देकर हमें प्रोत्साहित किया है और हमारे इस कार्य को कामयाब बनाने में सहायता की है।

तोबदन

लेखकों की ओर से पत्र

पटनी बोली में एक लघु कथा लिखी है। रचना मौलिक नही है। यह मूल ज़ेन बौद्ध कथा का रूपान्तरण है। पहली बार पटनी बोली में कुछ लिखने का प्रयास किया है। मेरे लिए यह कठिन कार्य था। क्योंकि बचपन से ही हिन्दी के सम्पर्क में रहा। स्कूलिंग, केलङ्ग में होने की वजह से बुनन बोली मुझे अधिक सुविधाजनक लगती है। कई स्थानों पर उपयुक्त शब्द न मिलने के कारण में ने हिन्दी के शब्द ही प्रयोग कर लिए है। इस के अतिरिक्त मैने निम्न कठिनाईयाँ महसूस की–

✦ पटनी बोली में 'ए' तथा 'ओ' ध्वनियों के दोनो रूप हैं– अर्थात् दीर्घ एवं ह्रस्व। देवनागरी लिपि में इन ध्वनियों के दीर्घ एवं ह्रस्व रूपों के लिए अलग–अलग मात्राएं नहीं मिलती। अतः पाठ में असुविधा हो सकती है। तस् ध्वनि (TSERING) को 'छ' लिंखा गया है वह भी पाठ व मुद्रण/टंकण में असुविधा से बचने के लिए ही है। इसी प्रकार च, ज़ आदि पैरों में नुक्ते लगा कर दर्शाए गए हैं।

✦ स्वराघात/बलाघात भी इसीलिए नहीं दर्शाए गए कि एक शब्द में वर्णों से अधिक मात्राए हो जाती है जो कि पाठ में असुविधा उत्पन्न करती हैं। चिनाली बोली में लिखी कथा का लिप्यान्तरण भी मैंने किया है। उनकी बोली पहाड़ी हिन्दी के अधिक निकट है अतः उस में विशेष कठिनाई नहीं हुई। हां,. शुद्ध स्वराघात को पकड़ पाना यहां भी संभव नहीं हुआ।

✦ दोनों ही बोलियों के शब्द प्रायः 'ह' ध्वनि पर समाप्त होते है अथवा बीच में 'ह' ध्वनि का अधिक प्रयोग है। मैं निर्णय नहीं ले पाया कि इसे विसर्ग (:) से दर्शाया जाए अथवा 'ह' वर्ण से ही दर्शाना अधिक उचित रहेगा। फिलहाल जहां यह ध्वनि मुखर नहीं मैने दोनों ही रूपों को प्रायः टाल दिया है।

✦ अन्ततः, किसी बुजुर्ग जो इन भाषाओं की जानकारी रखता हो, से उन रचनाओ का सुधार करवा दीजिए। छपने के बाद भाषा विदों से इन सभी रचनाओं का विश्लेषण करवाया जा सकता है जो कि हमें अच्छा मार्ग दर्शन दे सकता है।

आपकी पत्रिका के लिए शुभकामनाओं के साथ।

अजेय
केलांग

सारनाथ
23.12.2004

मैने कुछ लिखने का प्रयास किया है। अपनी भाषा में लिखने का अभ्यास न होने से वर्तनी में भी परेशानियां हैं। उस पर बोलचाल की भाषा को लेखन में लाना कुछ असहज सा प्रतीत हो रहा है। लगातार लिखते रहें तो शायद कुछ वर्तनी एवं नियम स्थिर कर सकें। जैसे खोकसर का वर्तनी कैसे लिखा जाए फिलहाल मैने खोग–ग्सरं लिखा है। विचारणीय है। फिर भी एक प्रारूप तैयार किया है।

बनारसी लाल,
सारनाथ

विषय सूची

मन्चद में शगुण

जै महाराज धरतरी (धरती), जिबदग,
भूत देवता, कैलास, खोरदेव, अजा पार
स्वामी, माता
हिड़िमा, खेपर खानी, नैना देवता,
राजा घेपन, शिवजी, मनु महेश,
शरशोक छोकांग स्रुङ्मा जय शिवशंकर
भोले महादेव शागुण परमेश्वर महाराज।

धरतरी= धरती,
जिवदग – जिन्दाग (भोटी) = मालिक।
अजापार – सम्भवतः अजयपाल – बावन वीर में से एक।
भूतदेवता – भूत एक देवता का नाम है।
खोरदेव – पट्टन घाटी में इस देवता के मन्दिर है।
खैपर खानी ?
नैना देवता?
शरशोक?
छोकांग – संभवतः छोद–खांग (पूजा गष्ह)।
स्रुङ्मा – धर्मरक्षक।

उक्त पाठ श्री छेरिंग फुन्चोग, गांव लोमचाहड., जिनकी आयु आज सन् 2005 में 97 वर्ष हो चुके हैं, से सन् 2000 में कागज़ पर उतारा था। जुलाई 17, 2005 को उनका देहांत अपने ही गांव मैं हो गया ।

– तोबदन

लाहुल और स्पिति की बोलियों का वर्गीकरण

लाहुल और स्पिति में अनेक बोलियां बोली जाती हैं। अलग-अलग बोलियों के नामों की पहचान करने के लिए हिमाचल प्रदेश भाषा एवं संस्कषति विभाग की सहायता से एक गोष्ठी 11 दिसम्बर, 2004 को संस्था ने लाहुल-स्पिति जनजातीय भवन, गोम्पा, बदाह, कुल्लू में आयोजित किया था। इस में लाहुल, कुल्लू और स्पिति के प्रबुद्ध जन, स्त्रि और पुरूष सम्मिलित हुए थे।

इन नामों को दो प्रकार से पहचानने का प्रयत्न किया गया 1) भौगोलिक दृष्टि से तथा 2) समाज के विभिन्न वर्गों के आधार पर। गोष्ठी में वाद विवाद के बाद जो परिणाम उभर कर सामने आये वह इस प्रकार से है।

1 तोद :- भागा घाटी के उपरी भाग को स्तोद (तोद) कहते हैं। यहां के लोग अपनी बोली को तोदपा कहते हैं। लाहुल के अन्य निवासी भी इसे इसी नाम से जानते हैं। इस का क्षेत्र है कोठी कोलोंग तथा गुमरांग कोठी का करिंग गांव। यहां बोली जाने वाली दूसरी बोली है गरा। इस वर्ग की बोली को पुनन में डोम्बा, तिनन में डूम तथा मन्चद में लौह्रार नाम से जाना जाता है। यह बोली इन सभी जगह बोली जाती है।

2 पुनन :- यह भागा घाटी का नीचे का भाग है। इसमें कोठी करदंग, बरवोग और गुमरंग (करिंग गांव को छोड़ कर) आते हैं। ये अपनी बोली को एरांग कद् (अपनी बोली) बोलते हैं। तोद वाले इन को पुनन तथा मन्चद वाले इसे गाहरी कहते हैं। लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में इसे बुनन लिखा गया है।

3 रांगलो :- चन्द्र नदी के उपरी भाग में बोली जाने वाली बोली, रोपसांग नाला से लेकर ग्रम्फू तक, को यहां के निवासी तथा लाहुल के अन्य लोग भी इसे रांगलों नाम से जानते हैं।

4 तिनन : – चन्द्र घाटी के नीचे के भाग, बांई ओर के चार गांव को छोड कर, में बोली जाने वाली बोली को यहां के निवासी स्वयं तिनन कहते हैं तथा दूसरे लोग भी इसी नाम से जानते हैं।

5 पट्टन :– चन्द्रभागा की संयुक्त नदी की घाटी को पट्टन, सोंगला, मन्चद तथा मेलोगस कहा जाता हैं। यहां के सामाजिक वर्ग हैं सांगला, बोदे (गरू) चाहण (शिपि) और लोहार।

क यहां की प्रमुख बोली को इसके बोलने वाले सांगला कहते हैं। तोदपा इसे मन्चद, पुनन वाले मेलोगस, तिननवाले सोंगला तथा रेबाग (थिरोट से नीचे का इलाका) वाले इसे पिलोपा कहते हैं। लाहुल से बाहर के लोग इसे पट्टनी के नाम से जानते हैं। इसके बोलने वाले इसे चांगस्पा के नाम से भी जानते हैं।

रेबाग अथवा रेउपा, थिरोट से नीचे का इलाका, का भौगोलिक नाम अलग है परन्तु यहां की बोली सांगला ही है।

ख चिनाल :– यहां बोली जाने वाली दूसरी बोली है चिनाल। इस बोली को बोलने वाले इसे इसी नाम से जानते हैं। दूसरे लोग इसे चाहण कहते हैं तथा तोदपा और पुननपा इसे शिपि नाम से जानते हैं।

ग मियाड़ :– यहां की बोली को पट्टन और तिनन के लोग मियाडी कहते हैं। तोदपा और पुननपा इसे पतानम कहते हैं।

6 स्पिति :– स्पिति की बोली को सभी लोग समान रूप से पिति नाम से ही जानते हैं।

गोष्ठी के दौरान कुछ विद्वानों ने इस प्रकार से सुझाव दिये :–
डा0 सूरत राम का कहना है कि इससे आगे इन बोलियों पर अनुसन्धान

होना चाहिए।

सुश्री विद्या शर्मा का सुझााव था कि अनुसंधान सामाजिक वर्ग के आधार पर होना चाहिए।

श्री मौलूराम ने गोष्ठी की उपादेयता की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि चन्द्रताल के लिए सहायता करने की आवश्यकता है। इस कार्यशाला की उन्होंने सराहना की। उन्होंने आगे कार्य करने के लिये व्यवहारिक मार्गदर्शिका दी। उनका कहना था कि जैसे कि एल एस आई में प्राडिकल सन की कहानी का अलग –2 भाषा में रूपान्तर दिया गया है वैसे ही यहां अलग –2 बोली के लिए प्रयोग करना चाहिए। इनमें व्याकरण के सभी गुण दिखाई दे जाते हैं।

श्री लाल चन्द ढिस्सा का कहना था कि इन बोलियों का विभाजन भाषा की दो महान परिवार के आधार पर होना चाहिए।

श्री छेरिंग दोर्जे जी का कहना था कि इन बोलियों का फिर से वर्गीकरण होना चाहिए।

कर्नल (रिटायर्ड) श्री प्रेमचन्द, संस्था के प्रधान, ने गोष्ठी का समापन करते हुए गोष्ठी के मूल उदेश्य की ओर फिर से सब का ध्यान आकर्षित किया। उनका कहना था कि यु0 एन0 ओ0 के सांख्यिकी के आधार पर विश्व में अनेकों बोली और भाषा लुप्त होने के कगार पर हैं। यही परिस्थिति हमारी बोलियों का है। इसे बचाए रखना हमारा कर्तब्य है। इसी बात को ध्यान में रख कर इस गोष्ठी का आयोजन किया गया था। उन्होने जिला भाषा अधिकारी, भाषा विभाग हिमाचल प्रदेश, का धन्यवाद किया। विद्वान डा0 सुश्री छिमेद शाशनी, सर्व श्री ठाकुर मौलू राम, डा0 सूरत राम, छेरिंग दोर्जे तथा लाल चन्द ढिस्सा और सभी सहभागियों का उनके महत्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

– तोबदन

टशी लग्याल उर्फ लामाजी का आखरी जुले

रेडिओबाजा

बाईस फरवरी की शाम आकाशवाणी शिमला के लाहुल–स्पिति कार्यक्रम में टशी लग्याल की अपनी खबर थी – लाहुल–स्पिति कार्यक्रम के संचालक श्री टशी लग्याल हमारे बीच नहीं रहे। आज सुबह शिमला में अकस्मात उनका निधन हो गया। उनका जन्म 6 जून 1942 को लाहुल के गांव खंगसर में हुआ था। वह 1992 से आकाशवाणी में सेवारत थे।

25 फरवरी 1971 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने शिमला में हिमाचल को पूर्ण राज्य घोषित किया था उसी दिन आकाशवाणी शिमला से लाहुल–स्पिति कार्यक्रम का प्रसारण शुरू हुआ था। टशी लग्याल ने एक कैजुअल कलाकार के रूप में यह कार्यक्रम देना शुरू किया और 1972 में वे नियमित हो गये थे। वर्ष में लगभग आठ महीने शेष दुनिया से कटे रहने वाले लाहुल–स्पिति के लोगों को पूरे तेईस वर्षों तक लगातार देश दुनियां की खबर देने वाले टशी लग्याल ने गत 20 फरवरी के कार्यक्रम में अपने श्रोताओं को आखरी "जुले" कहा। उस शाम का कार्यक्रम रिकार्ड करवाने के बाद घर पहुंचते ही टशी लग्याल को अस्पताल पहुंचाना पड़ा, जहां पेट का अल्सर फटने से 22 फरवरी की प्रातः उनका देहांत हो गया। अंतिम संस्कार में लाहुल के लोगों के सिवा उनके पड़ोसी, आकाशवाणी के कुछ कार्यक्रम निष्पादक और सहकर्मी भी शामिल हुए। लेकिन शिमला में रहते हुए भी आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक या किसी उच्चाधिकारी ने शिष्टाचार वश भी अस्पताल या अंतिम संस्कार में शामिल होने का कष्ट नहीं किया। एक प्रसारण कलाकार जिसकी आवाज में यें रेडियो दिन रात बोलता है की आखरी नियति संभवतः यही है।

टशी लग्याल नाम का वह शख्स सिर्फ प्रसारण कलाकार ही नहीं था वह भोटी और संस्कृत का विद्वान भी था। भोटी की शिक्षा लाहुल में पारंपरिक रूप में प्राप्त की थी, जहां वे खंगसर गोम्पा के लामा भी रहे। दिल्ली में संस्कृत शिक्षा कुछ

वर्षों तक ली और बनारस से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। लाहुल से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने वाले तीन प्रमुख व्यक्तियों में टशी लग्याल उर्फ लामाजी का नाम आदर से लिया जाता है। दूसरे टशी पलजोर, तिब्बती शिक्षा संस्थान लद्दाख के प्रधानाचार्य हैं, और तनज़िन छकदोर गाजियाबाद में हैं।

आकाशवाणी शिमला के कषि जगत कार्यक्रम में लग्याल लामाजी के नाम से ही जाने जाते थे। कषि सभा के बीच जब रोहतांग पार की बात होती या ज्ञान–ध्यान की बात छिड़ जाती तो अक्सर लामाजी की राय ली जाती। लामाजी बहुत संयत और गंभीर बतियाते।

रोहतांग पार की खामोश दुनियां में टशी लग्याल की आवाज सप्ताह में तीन बार लाहुल–स्पिति कार्यक्रम में विशेष चाव से सुनी जाती थी। खबरों व कबाइली संगीत के साथ वे भोटी में वार्ता आदि भी प्रसारित करते थे। बौद्ध तीर्थों की यात्रा पर निकले यात्रियों की खबर भी रोहतांग पार बातों में ही पहुंचा देते और भाई साब जी केलांग सैला कृकृकृ वाला गीत बजाकर अपने लाहुल देश की यात्रा के लिए लोगों को प्रेरित करते रहे। लाहुल निवासियों के लिए टशी लग्याल उर्फ लामाजी, उर्फ आकाशवाणी शिमला भी हो गए थे। कभी लाहुल वालों के बीच जाते तो लोग उत्साह में स्वागत करते आकाशवाणी शिमला जुले जुले। 23 वर्षों की सेवा साधना के बाद आकाशवाणी शिमला के पहाड़ी कार्यक्रम के लामा कलाकार हमेशा के लिए बुद्ध की शरण हो गये हैं। चंद्रा भागा और स्पिति नदियां निस्संदेह मूक मौन है शोक में।

–कर्णसुख

(जनसता, 24 फरवरी, 1994 से साभार।)

स्पिति से एक गीत

नो–मो द्वाड.–मो लगस्

नो–नो ग्ज़िस्–कोद् लगस्
फुन्–छोगस् दोन–ग्रुब लगस्।
फ्यु–ब फु–दुड्. ब्स्नमस् दे स्क्योद् दड्.
नो–नो ग्ज़िस्–कोद् लगस्।
फ्यु–ब फु–दुड्. ब्स्नमस् दे स्क्योद् दड्.
फुन–छ़ोगस दोन ग्रुब लगस्।

ड.–ती नो मो लगस्।
शिस्–स्किद् द्वड•मो लगस्।
मंगो–द्वड्. ग्यु जुड.स्
ब्स्नमस् दे स्क्योद् दड्.
नो–मो द्वड्. मो लगस्।

नो–मो द्वड्. मो लगस्
दपल–ग्यु यी ग–उ ब्स्नमस् ल ज्हु।
नो–मो द्वड्. मो लगस्

नो–नो ग्ज़िस्–कोद् लगस् फुन–छ़ोगस्
दोन–ग्रुब लगस्।
ल–ओ–री दु–बग् ब्सनमस् दे
स्क्योद दड्. नो–नो ग्ज़िस्–कोद् लगस्।
ल–ओ–री दु–वग् बसनमस्–दे स्क्योद दड्.
फुन–छ़ोगस् दोन–ग्रुब लगस्।

नो–मो द्वड़्–मो लगस्
दोन–ग्रुव ला ग्ज़िगस् ते
चि ल बशुमस् योद लगस्।
नो–मो द्वड़्–मो लगस् ।

नो–मो द्वड़्–मो लगस् ग्सेर ग्यी
सोर–गदुब् ब्स्नमस् ल स्क्योद् चिग।
नो–मो द्वड़्–मो लगस्।

नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।
दु–लिड़. ज़म–प मि–ब्ज़ड़. योद।
ग्ज़िगस् ल स्क्योद
नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।

नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।
बन–गो ज़म–प ग्चद् दे स्क्योद।
नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।

नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।
होर–र्त स्ड.ोन्–मो ल फ्यिबस् दे सकयोद्।
नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।

नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।
स दे ल–द्वगस् ग्ज्हुड़् ल स्क्योद्।
नो–नो ग्ञिस्–कोद् लगस्।

प्रस्तुत गीत स्पिति से प्राप्त एक अत्यन्त लोकप्रिय गीत है। इस में ठोस एतिहासिक तथ्य सुरक्षित हैं। यह गीत लद्दाख, लाहुल और जंस्कार में बहुत लोकप्रिय है। अभी इसी गीत के आधार पर और गीत बने हैं और वे भी इतने ही

लोगों में पसन्द किया जा रहा है।

यह गीत भाई और वहन के बीच प्रेम पूर्ण संवाद का दष्य है। संभवतः ये स्पिति के राजघराने से सम्बन्धित थे। भाई दोनों लडाई में जा रहे हैं। शायद लद्दाख के राजा का संदेश आया है। दुलिंग पुल स्पिति में है। बानगो बासगो के लिए है। इसे शायद युद्ध में तोड़ा गया था। वैसे 1681–83 के लद्दाख–मुगल के तिब्बत के साथ युद्ध में इस स्थान का नाम प्रसिद्ध है। यह नाम संभवतः इसी युद्ध की ओर इंगित करता है। लाहौर का बन्दूक इसमें एक और महत्वपूर्ण तथ्य है। शायद यह इसी काल को दर्शा रही है। वैसे लाहौर के साथ लद्दाख और स्पिति का सम्पर्क जोरावर सिंह तथा सिक्ख काल 1834–1846 में भी हुआ था। होर (मंगोल) के नीले घोड़े का वर्णन भी पहले तथ्य को ही समर्थित कर रही है।

भावार्थ

बहन– भाई फुन्छोग दोन डुब जी छु–वा (लम्बा चोगा) पहन कर जाएं।

भाई – मेरी बहन शिस्–किद् वांगमो जी सिर का पिरोज़ा (बे–राग) पहन कर रखें।

बहन– पवित्र पिरोजठा वाला वक्सा (गउ) पहन कर ही रखना।

बहन– भाई जी लाहौर का बन्दूक अवश्य लेकर जाना।

भाई– बहन, भाई दोनडुव को देखकर क्यों रोती हो।
बहन– बहन सोने की अंगूठी भी पहन कर रखना।
बहन – भाई! दुलिंग का पुल खतरनाक है। देख कर जाना। बनगो (बास्गो) का पुल काट कर जाना। और भाई जी होर (मंगोल) के हरे रंग के घोड़े पर सवार हो कर जाना।
भाई तो लददाख की राजधानी जा रहे हैं।

–तोबदन

लौहार बोली – कुछ वाक्यों के नमूने

मैं जाता हूं।	हाऊं गानू।
हम जाते हैं।	अपसी गानू।
तू पढता है।	तू पठना भोसई। (स्त्री0) तू पठनी भोसई।
तुम दौडते हो।	तुसनामा द्रो देना।
वह लिखता है।	रूनी लिखना।
लड़की जाती है।	ज़लों गानी।
लड़का जाता है।	मठा गाना। मठी गानी (स्त्री)।
लड़कियां जाती हैं।	जलानामा गानी।
मैं कल गया था।	हाऊं गिया था। (स्त्री) हाऊं गी थी।
में कल जाऊंगा।	हाऊं शुईगानू।
हम कल जाएंगे।	असनामा शुई गानू।
कापी किसकी है।	कापी केसरी भो।
हम यहां बैठे हैं।	असनामा इठ बेठो रे।
मुझको किताब दो।	मुहरे किताब दे।
सुबह से लेकर शाम तक काम करता हूं।	दोतेई पांस्ती ला काम करनू।
सुबह के लिए चाय है।	दोतकानी चा अस।
चूल्हे से धूंआ निकलता है।	चूल्हे धूं निसना।
यह घर मेरा है।	मेरा घर भो।
मैं घर में रहता हूं।	हाऊं घरे बेठोरे।
आदमी नहीं है।	माऊं नाईं।
जल्दी करो।	यूरन करो।
धीरे चलो।	सूले हण, गा।
खाना खाओ।	खईवा खा।
पानी पीओ।	पाणी पी।
	[illegible] रूणू अस।
	गरका अस।

वृक्ष बड़ा है।	बुट मोड़ अस।
नदी गहरी है।	पाई डूगा अस।
भर कर लाया।	भरी आणरी।
पुल हिलता है।	पजु लुकना।
दीवार टूटता है।	भीत उडवी गाना।
पत्थर गिरता है।	रूण उड़वी गाना।
चांद निकलता है।	चनी लगी।
सूरज डूबता है।	धूप बूई।
चिड़िया उडती है।	चई फुरची करी गानी।
वह आटा पीसता है।	कणक पीणहा।
मिस्त्री घर बनाता है।	मिस्त्री घर चिनना।
अपना सामान है।	मेपा बहणू।
घास काटने जाता हूं।	गाह लूईवे गानू।
लड़की जाती है।	ज़लों गानी।
लड़का जाता है।	मठा गाना। मठी गानी (स्त्री)।
लड़कियां जाती हैं।	जलानामा गानी।
मैं कल गया था।	हाऊं गिया था। (स्त्री) हाऊं गी थी।
में कल जाऊंगा।	हाऊं शुईगानू।
हम कल जाएंगे।	असनामा शुई गानू।
कापी किसकी है।	कापी केसरी भो।
हम यहां बैठे हैं।	असनामा इठ बेठो रे।
मुझको किताब दो।	मुहरे किताब दे।
सुबह से लेकर शाम तक काम करता हूं।	दोतेई पांस्ती ला काम करनू।
सुबह के लिए चाय है।	दोतकानी चा अस।
चूल्हे से धूंआ निकलता है।	चूल्हे धूं निसना।
यह घर मेरा है।	मेरा घर भो।
मैं घर में रहता हूं।	हाऊं घरे बेठोरे।
आदमी नहीं है।	माऊं नाईं।
जल्दी करो।	यूरन करो।

धीरे चलो।	सूले हण, गा।
खाना खाओ।	खईवा खा।
पानी पीओ।	पाणी पी।
सड़क में पत्थर है।	पथे रूणू अस।
पत्थर भारी है।	रूणू गरका अस।
वृक्ष बड़ा है।	बुट मोड़ अस।
नदी गहरी है।	पाई डूगा अस।
भर कर लाया।	भरी आणरी।
पुल हिलता है।	पजु लुकना।
दीवार टूटता है।	भीत उडवी गाना।
पत्थर गिरता है।	रूण उड़वी गाना।
चांद निकलता है।	चनी लगी।
सूरज डूबता है।	धूप बूई।
चिड़िया उडती है।	चई फुरची करी गानी।
वह आटा पीसता है।	कणक पीणहा।
मिस्त्री घर बनाता है।	मिस्त्री घर चिनना।
अपना सामान है।	मेपा बहणू।
घास काटने जाता हूं।	गाह लूईवे गानू।

गिनती

एक, दुई, त्राई, चौ, पंज, छः, सत, आठ (शेष हिन्दी की तरह)।
बीस के बाद फिर एक, दुई से आरम्भ होता है।

एक सौ	शौ।
एक हजार	हजार।

शब्दार्थ

छाल	कड़ा	खट्टा	अमला
गेहूं	ज़द	मीठा	गुल्लाजौ (ने)

जौ	ग्हू	नमकीन	लोड.ा
जौ, छिलके वाला	द्हक	नमक	लोड.
घास	गह	सेब	चोए
अखरोट	थणा	देवदार (शुर, शुक्पा)	लेउड
बेली, चड.मा	लठी	खुरमानी	चहिर
भ्रेस	ब्रेस	चावल	चाव
श्सर	क्पा	कान	कन
गल	च्रनी	मुंह	तुतुर
आंख	टीरा	कंधा	पही
नक	न्क	हाथ	हथ
पीठ	पिठ	माथा	निला
घुटना	जहनू	पैर	खुर
डंगली	टंगुली	हथेली	पलथी
गर्दन	मुथु	पेट	पेट
बल	शिख	घुटना	जाहनू
हम	असनामा	मैं	हाऊं
तू	टू	तुम	तुसनामा
वह	एने	वे	ओनेनामा
बुलाना	आईवो	पढना	पढीवे
सीटी मारना	फयूकार	लिखना	लिखिवे
सो जाना	डेश करीवा	बोलना	आउईव
मिटाना	दूशीवा	आना	आईवे
चराना	चरिवा	जाना	गईवे
चाटना	चाटिव	रूठना	रोशेवा
जल्दी	युरन	हंसना	हासीवा
बैठ	बेश	रोना	रोलीवा
प्रस्थान	उबटीवा	उठना	उठीवा
घूमना	किरज़ी करीवा	चलना	हणिवा
बैठना	बेशीवा	गाना	गीत बोली वा

धकेलना	पे लाईवा	खाना	खाईवा
पीना	पेवा	तोड.ना	त्रोईवा
काटना	काटीवा	जोतना	बाग बाईवा
दौड़ना	द्रो दीवा, ज़रका दीवा	फूंकना	फू करीवा
फैंकना	फटाईवा	हारना	यारजी
छांटना	तलीवा	नाचना	नाचीवा
बजाना	राग लाईवा	काटना	लूई
उठो	उठ	नाचो	नचो
जाना	गनू	पूछना	पुछ़ना
बाहर	बईरो	सर्दी	यूने
पुत्र	मठा (कोआ)	गर्मी	बढीया
पुत्री	मठी	खर्च	खर्च
साल	बर्ष	अमीर	सहूकार
महीना	मह	गरीब	मतोच़ी
क्यों	केतर	कैसे	केरे
चालाक	शड.	सुस्त	खरा
बिस्तर	थ्वसां	कम्बल	दुआ
कांटा	छ़ोआंग	चिकना	निड.टा
सफेद	शुका	कोना	कुणी
छोटा	छ़ोटा	लम्बा	लमा
नीचा	ओन्ना	ऊंचा	उथा
वर्षा	स्दाल	बर्फ	मेघ
कब	कं	क्या	खी
डर	डर	कहां	कोठे
देवता	देऊ	राक्षस	रागस
टहनी	यन्लाग, ब्रहन	ईश्वर	भगवान
पुरूष	मुशला	पत्ता	लप
		परशुई	परसों
शुद्ध	सलाटा	कुता	कुतू

असली	चेचेई	बिल्ली	बिलाई
नकली	न्कली	शेर	शेर
गाय	ग	बैल	बड्डा
भेड़	पैरू	बकरी	बकरी
घोड़ा	गेआ .	गधा	कारा
बन्दूक	त्बूक	लकडी	रठोक
खेत	बग	पानी	पाईं
सूरज	सूरज	दिन	दीया
रात	श्रात	तारा	तारा
आकाश	सर्ग	धरती	धरती
मिट्टी	ज्न	तेल	तेल
सब्जी	शाग	खुशी	खुशी
गर्मी	बर्दी	शीत	शीया
वसंत	ब्सने	गर्मी	ताता
पतझड़	शेरे	लाल	रक्था
हरा	नीला	पीला	पीया
काला	क्रीटा	गाना	गीत
घर	घर	खिड़की	उड्रू
दरवाज़ा	द्वार	अन्दर	अन्दर
पिता	बह	कुल्हाड़ी	कुड़ाही
धोना	शुलज़ी	अच्छा	रूठे
माता	टमा	किसका	केस
जाओ	गह	खाई	थोए
चशमा (पानी का)	मितरा	कमीज़	कुर्ती
कोट	कोटा	पायजामा	सुतूं
झाडू०	पौगर	जीतना	डाकशी

लौहार की बोली की ऊपर दी गई वस्तु मनाली में बैठकर, केलांग से एक बजुर्ग लौहार तुन्डुब सुपुत्र टेकू सुपुत्र टिक टिक थे, जो उस समय सरिये का काम करते थे और उमर 80 से ऊपर थी, लगभग 30 बर्ष पहले उनसे और उनके परिवार से एकत्रित की थी।

तोबदन

कोंइं खि पता

एक ज़िम्दारेर सलाट घोआ थुर त्रोड़ि नठस्। पता लगबे साथे नगरिरे तेने हतुईवे गेस्। "कोने घाटे रूठो माल थिऊं। हगणे अंजि नशालु। बड़ा दुखेर गप्पा भुआ।" कोइं खि पता। ज़िमदारे अबुझ भुई बोलूंस्।

त्रिः ध्याड़े पिछोई घोआ बणेलि चौपंज घोओ तकड़े–तकड़े रूठे नस्लेर साथे घरां फिरि आस्। नगरपे जिम्दारेस् बधाई धिति – बडा खुशीर गप्पा भो। हेबे त तपू कई रज्ज माल "कोंइं भोलू"। ज़िम्दारे फिरि अबुझ भुई कहैं।

थोड़े ध्याड़े पिछोई ज़िम्दारेर कोआ खरका घोआ पलाईबे गेया। घोअेरि झडि हत्थ कोन्ज़ त्रोई बेठा। नगरिरे तेने फिरि आए। बड़ा अफसोस भुआ। तेंः एक्के कोआ इनि घाटे डील जवान छोकरा हत्थ कोन्ज त्रोडि कोते मुतांड़ भुई गेया। तें त निला ए ढेरा अस्।

कोइं भोलु। ज़िम्दारे सै हे गप्पा धुराल।

होरदि रज्जे फौज नगरि आपरिस। पडोसी मुल्के साथे लड़ाई लगोरि थी। ध्याड़ी शव शव फौजी मरतैंति। फौज मुकबे आओरे थिए। तेने नगरिरे छाकरे पकडल पकड़ल भरती कराणे लाऊरे थिए। जिम्दारे कोआ लट्टा टुण्डा कोट्टेबि जुम्बि न किया। नगरिरे तेने फिरि कट्ठा भुई ज़िम्दारेस् कांई आस्– "असैं त अपसु के बद्दे मठे नशाले। फौजेर गप्पा खि पता, जिन्दे छुटतेरे या न छुटते। तैः तऊं रूट्ठे किस्मत। तऊं कोआ बचा।"

"कोइं खि पता" ज़िम्दारे कहैं।

जोगराम छोटू
खोरपाणी

चिनाली बोली – कुछ वाक्य

मैं दौड़ता हूं।	हऊं द्रो देंदस।
हम दो दौड़ते हैं।	अद्वि द्रो देंदेसु।
हम सब धीरे धीरे चलते हैं।	असे सूले सूले हटतेसु।
मुझे आटा और पानी दो।	मुं कणक औ पाई दे।
मैने खेत खोदी।	मिईं छेतुर खंडूस।
हम दोनों बैल से खेत जोतते हैं।	अद्वि बछेले लई छेतुर बांदेसु।
मेरे लिए बनाएं।	मुरे बणा।
क्या मेरे लिए घर बनाओगे।	मुरे घर बणाला।
नदी से पानी ऊपर नहीं ला सकते।	नेइली पाई खालेरि आणी नीटेस।
यह मेरा और वह तेरा बकरा है।	ई मेंह ओ तेंह बकरा भो।
बन में पक्षी रहते हैं।	बणां चई बेहिठी।
यह घोडा काला है।	ईह घोआ कष्ठा अस।
भेड़ सफेद है।	भेड़ शुकडी अस।
ऊन नर्म और सिर बड़ा है।	ऊन कोणी त कपा मोढ़ा अस।
यह लड़की।	इस शीरी।
वह लड़का।	ओ शोरू।
मैं गया।	हऊं गेई।
हम सब गए।	असे गेए।
हम सब गईं।	असे गेए।
मैं जा रहा हूं।	हऊं गसतस।
हम जाएंगे।	असे गइले।
हम दोनों गए।	अद्वि गे।
मैं जाता हूं।	हऊं गच्छु।
मैं जाती हूं।	हऊं गच्छु।
मैं जा रही हूं।	हऊं गसतिस।
मैं जाउंगा।	हऊं गच्छु।
तुम कहां जाते हो।	तु कोरे गसता भोस।

वह क्या करता है।	से खी करतस।
मैं लिखूंगा या पढ़ूंगा।	हऊं खिता लिखूं खिता पढु।
मैं गाता और नाचता हूं।	हऊ घीत लादंस औ नचतस्।
वह रात दिन काम करता है।	से रात औ दीन कम करतस।
मैं सोता हूं वह बोलता है।	हऊं ढेणी करतस् से गफे करतस।
सब हंसते हैं रोते हैं।	बदेह हसतेस, रोलतेस।

गिनती

एक, द्वि, त्रई, चोअर, पंज, छह, सत्त, अठ, नऊ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौउदा, पंदरह, षोआ, सतारह, अठारह, उनी, बिह, बिई एक।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मैं	हऊं	तू	तु
वह	से	यह	इह
उनको	तेनह	उसको	तेस
हराघास	हरह तष्व	काले बादल	कष्ठे बदुड़
तेज चाल	युहता हटवा	चावल	चऊ
जौ	ट्रक	गेंहू	गेऊ
आग	अग	लकड़ी	कठी
पत्थर	रूणह	ठण्डा	शेऊ।
कमरा	पुरह	गर्म	तत्तु
नर्म	लुगलुगब	हन	मेंह
बड़ा भाई	जेठा भाई	माता	याह
पिता	बाह	छोटा भाई	केबड़ा भाई
चाचा	बबा	मामा	ममा
बाहर	भइरां	अन्दर	अन्दुर
हां	चे	नहीं	नुह
अब	एबे	बैठो	बेश

शेष पृष्ठ 27 पर

लारा

(लाहौल के देवताओं की कथा)

प्राक्कथन :— प्रस्तुत कथा लाहौल के देवताओं के विषय में है। देवताओं की पूजा लाहौल का प्राचीन धर्म है।

मूल कथा श्री गोपीराम के शब्दों में उन्हीं (तिनन) की बोली में है। सन् 1974 में यह कथा कागज़ पर उतारी थी उस समय उनकी आयु 81 वर्ष थी। वे देवता ग्युंग्डुल (नाग देवता) के पूजारी हैं। परम्परा से उनका वंश यह कार्य करता आ रहा है। वे गांव सकर (तिनन) में रहते हैं। सर्दियों में एक दिन रात को यह कथा वे देवालय में गांव वालों को सुनाते हैं।

उनके कथनानुसार यह कथा पुस्तक के रूप में भोटी में लिखी हुई थी। पुस्तक गांव खोरपाणी (तिनन) में किसी के पास थी जो ग्लेशियर में बह कर नष्ट हो गई।

लारा – मूल कथा

तुंग रिंग लिंग रिंग सद मतोरे। ग्युंग्डुल ज़ी कुह्वग दिंग लिंग तुलची इलतोई। ग्यगर तिंग ज़ी भहते सदते अन्तिरे। इन्ज़ी तंग अम्पो भहते दिर कुरचे अन्तिरे। दोरे भहते ग्युंग्डुल ज़ी अम्पो हन्ति। दोंग ज़ी दोरे बरलचे रिंग पिड़िरे। दोंग ग्युंग्डुल गंग बिचंग जोक्की चरती। दोंग ज़ी नफेन–नूफेन दिंग पिटरे। दोंग रक्सणी दोरे भहते दोंग लेभती। दू रक्सणी कुह्वग केन भहते ग्यू जायदाद कुरची अनचची। ओंडिग कुट्री रंग अम्पो गेपंग नंगटे होस ज़े। दोंग ज़ी भहते जायदाद होन्क्यी थोर लाकी केरिरे। गेपंग जी रहुमु सोल ज़द रहुमु सोल ब्रहपो भावेरतु डोंगुना उक्यी अमचू यांगपेची चोगकी केरि। दोंग ज़ी भहते सादे अन्तिरे। जेमुग तुंग पिक्ये राक्सणी दिरां–नूरां ब्रक्यांग क्यांगज़ी जोची। कुट्रे ग्यू थिलुंगज़ी इलची। दोंगज़ी ईन्जी तू बिचां मोगबल लचरे। भहते खड.गे थलांग ग्युंग्डुल मतोपिचे। इन्जो तू बिचां ग्युंग्डुल पेट्री इबीम थलचे रूक्सिरे। तांगजर ज़ी कुट्रे गे फर मफर नू.से त गे ग्युंग्डुल तू पेकिरंग इलतोग। दो रंग तांगजर इली। ओंतरोग ग्युंग्डुल गांग बिचांग छोसकी बोसकी तोची। दो रंग तंगजर ज़ी तुम्पो रिंग शुक्ये रहुमु जू लचे। अच्छो कूक्ये। दोंगज़ी दोयी गांग–ऊ–नांग

लारा

(लाहौल के देवताओं की कथा)

प्राक्कथन :– प्रस्तुत कथा लाहौल के देवताओं के विषय में है। देवताओं की पूजा लाहौल का प्राचीन धर्म है।

मूल कथा श्री गोपीराम के शब्दों में उन्हीं (तिनन) की बोली में है। सन् 1974 में यह कथा कागज़ पर उतारी थी उस समय उनकी आयु 81 वर्ष थी। वे देवता ग्युंग्डुल (नाग देवता) के पूजारी हैं। परम्परा से उनका वंश यह कार्य करता आ रहा है। वे गांव सकर (तिनन) में रहते हैं। सर्दियों में एक दिन रात को यह कथा वे देवालय में गांव वालों को सुनाते हैं।

उनके कथनानुसार यह कथा पुस्तक के रूप में भोटी में लिखी हुई थी। पुस्तक गांव खोरपाणी (तिनन) में किसी के पास थी जो ग्लेशियर में बह कर नष्ट हो गई।

लारा – मूल कथा

तुंग रिंग लिंग रिंग सद मतोरे। ग्युंग्डुल ज़ी कुह्रग दिंग लिंग तुलच़ी इलतोई। ग्यगर तिंग ज़ी भहते सदते अन्तिरे। इन्ज़ी तंग ञम्पो भहते दिर कुरचे अन्तिरे। दोरे भहते ग्युंग्डुल ज़ी ञम्पो हन्ति। दोंग ज़ी दोरे बरलचे रिंग पिड़िरे। दोंग ग्युंग्डुल गंग बिचंग जोक्की च़रती। दोंग ज़ी नफेन–नूफेन दिंग पिटरे। दोंग रक्सणी दोरे भहते दोंग लेभती। दू रक्सणी कुह्रग केन भहते ग्यू जायदाद कुरच़ी अनच़ची। ओंडिग कुट्री रंग ञम्पो गेपंग नंगटे होस ज़े। दोंग ज़ी भहते जायदाद होन्क्यी थोर लाकी केरिरे। गेपंग ज़ी र्‌हुमु सोल ज़द र्‌हुमु सोल ब्रहपो भावेरतु डोंगुना उक्यी अमचू यांगपेच़ी चोगकी केरि। दोंग ज़ी भहते सादे अन्तिरे। ज़ेमुग तुंग पिक्ये राक्सणी दिरां–नूरां ब्रक्यांग क्यांगज़ी जोच़ी। कुट्रे ग्यू थिलुंगज़ी इलच़ी। दोंगज़ी ईन्ज़ी तू बिचां मोगबल लच़रे। भहते खड.गे थलांग ग्युंग्डुल मतोपिचे। इन्ज़ो तू बिचां ग्युंग्डुल पेट्री इबीम थलचे रूक्सिरे। तांगजर ज़ी कुट्रे गे फर मफर नू.से त गे ग्युंग्डुल तू पेकिरंग इलतोग। दो रंग तांगजर इली। ओंतरोग ग्युंग्डुल गांग बिचांग छोसकी बोसकी तोची। दो रंग तंगजर ज़ी तुम्पो रिंग शुक्ये र्‌हुमु जू लचे। अच्छो कूक्ये। दोंगज़ी दोयी गांग–ऋ–नांग

ज़ी होनचे ग्युंग्डुल रूकची भे क ख्यरिंग अम्मिन। दोंग जी जेन लिंग तुलची इवी तोरिंग। जेमुग पिक्ये रि्हनमो शगची अमच मक्येट्राग। दोंग ज़ी ग्यंग्डुल ज़ेमुग कचांग पिट्रे दोयी ख्युमरांग कक्ये रि्हनमो शग तिंग गाह केट्री। ख्युमरांग ञम्पो रि्हनमों शग तोरगे चरती। कूह रांग कूह बोग गलबी लक्की चरती। दोंग जी अन्तिरे। प्यूकर पिपी रांग ञम्पो मिऊ कद् थस्पाग्। दोरंग इन्ज़ा तू बिचांग रूक्सीज़ेर भे दिंग अरी छुकी तोतोर। दोरंग दोंग लिंग तुलचमी थलज़ी तंगजर बसिकती। अई दोरे राड.चा रिंग पिड़िरे। रांगचा रिंग पिप रंग ञम्पो गुले रिंग मिऊ कद् थस्पाग। दोंग लिंग तुलचिम थलजी मिलंग तेते बसिक्ती। दो रंग रि्हन्पो थोयर तूंग पीड़िरे। दोंगजी मरगि लिंग मिऊ कद थस्पाग। दोरंग ग्युंग्डुल ज़ी कुर्हग गे लिंग तुलचिम थलजे दिंग बसिक्पतग। दोरंग रोगुल तूं पिक्ये रोपसंग नगर तांगजर दोंग (मेलाघर) बसिक्ची। दोंगज़ी स्रस्रीन पिक्ये तिंगलोगुर, बज़ीर, दोंग बसिक्वे। दोंगज़ी पीड़िरे यांगलिंग। दोंग गेपंग बसिक्ती। दो तिंग ज़ातंग–सोलतंग लज़िपा अरिला मशुपिरे। स्रस्रीन दु मोका रिंग मोनच रे खरक्यांग बसिक तोरिरे। दोंग जी इन्ज़ो बिचांग ट्रोयेट्रब केट्ररे। दोंग ज़ी ग्युंग्डुल शदायचिरे। ग्युंग्डुल ज़ी कुट्री दी मोनच तिंग बज़र भंगो छंग लक्की अचोकू पोर्ह केटनि। दो रंग ग्युंग्डुल ज़ी दो तिंग बज़र भंगो छंग रणी। अचोकू पोर्ह केटी। दोंग थलंग दू मोनच रे ग्यूंग्डुल ज़ी बम्पी लक्की चरतिरे। मोनचरे भहते ख्यमकी अन्ची इलीरे। ग्यूंग्डुल ज़ी कुट्रे एने दिंग जोकी खि लतयीं एन तींग ज़तुंग ख्यल–ले मती। ग्युंग्डुल ज़ी, बज़ीर तिगलोगर रिंग कुट्रे ए–शग अमा रिंग रूकसी इलतोशी। ग्युंग्डुल ज़ी ज़ांगडू गोड़ा (गुरथब) बणिक्ति। दोंग ज़ी ग्यूंग्डुल ज़ी दु गोडा हुके नमका रिंग छंग के चरचे। कुट्रे असली आमा शूना से त होर तू यू दु टोकटींग छकपी हिस। दू गुरथब नमका रिंग ज़ी होर–तू यूदू टोंगटिंग छकती। आम खरक्वे–नागचे तोकिच। ग्युंग्डुल ज़ी आम री जू लची। दो रंग मांग्यी गोंडु पलमो, शी लाओ पलमो, गुरकुम रांग आम सूजे। अमा ग्यञिग–ग्यमेच चोक्कन लक्की चरची। आमे कुट्रे का कूह साद दे तू छे पोन इचन। कनिंग रहुञिंग थलंग कू सादे पयगतिंग कनू कचांग अन्तोर। दो रंग मिलंग तेते बरशो चिबो शूना, का दिऊ कचांग फयागतिंग अम्पी कोस्तो। तिगंलो गुर रिंग कुट्रे का बजीर शूना। चम्बो राजो कछांग लरी लथंग पेट्री करिंग कोस्तो। मेलाघर तिंग कुट्रे का छुंगपुन शूना कनिंगे बर शूक कूह सद तू मांग आलची कोस्तो। तिंगलोगुर तिंऊं पांगकेरच, जांग ड्रू क्युम्पांग, मूल–ऊ ब–च लक्की क्यूम्बा चम्बा रींग लरी–लथंग क्यूची इलजे। चम्बो रांग रिंग पीपी रांग ञम्पो चम्बो राजो·मरकचा दोंमज़ी। मरकची दोरिंग रूकचे बे क

ख्यांग इवीतोन। दोई कुट्रे केनू राजो दोंग लरी लथंग रिंग अम्पितो। दो रंग तिंगलो गुरे कुट्रे इन्ने जोकके खी लत शी ए शग पासा मक्यूरशिआ। दू मरकची रूकचे कई खी चुकतन? बज़ीरे कुट्रे ग्यू दोंग जांगड्. क्युंम्पांग तिंऊ पांगकेरच, मूलू वा चा तो तो दू चुकतग। दोई मरकचा रिंग रूकचे कई खी चुकतन? दोई कुट्रे गे कूह बाग खम कूह शोद ततग दू चुकता। दोरंग पासा क्योरिपी ठारीक्रहकू। बज़ीरे मरकच रिंग जांगड्. क्यूम्पांग तिंऊ पांकेरच मूलू वाचा भहते ञयदी। असके क्योरतोशी बज़ीरे कुरहग। गोड्. खोल ब्रेंचरिंग चूकके पांगऊं खोल ब्रेंचरिंग तचे इ्ची क्योरतोशी। दो रंग बजीर ग्यली। दोई खुरच शुक शुक होम्बिच। मरकचे कुट्रे का सद शुना। मा शुना सद जहते थसदू। बडीके ता कई ज़ंगड्. क्युम्पांग तिंऊ पांकेरच मूलू वाचा कूहबाग खम कूह शोद भहते शिला। दो रंग बज़ीरे कुट्रे कनु कूह बाग खम कूह शोद मिन्ची कई चम्बो रज़ा रिंग कुडू ग्यू लरी लथंग रडगु। दोंग थलंग मरकच रंग दोम्बा। बजीरे रूक चे कई चम्बो रजा रिंग कुम्मेन न मकुम्मेन। मरकचे कुट्रे पेसीरिंग। बज़ीरे कुट्रे गे तोग कनिंग नंकल चरचे इच्च रहग् किरकिर लक्की लहो डे रिंग कोल की चरचे। मरकची फितोग तेर शिलजे। दो रंग चम्बो राणी ज़गंडू. ज़ोआ कुरचे लाह चुरची इलज़ी। लाहज़ी दू राग टांग ञम्पो ज़ांगडू जोआं ठुप्के चरची। दो रंग रज़ा जी कुट्रे मरकेचा ग्यू रलड्री हांसी ताईच। मरकची दोंग अन्ची। दो रंग कुट्रे।

"रलड्री शुब नांग जुग,
ग्यापो ठी तोग ल जुग"।

गे इच अरज़ ततक्। दी ग्यू ख्याल मशुग, दी भोट देवो ख्याल शुग। बज़ीर राजो रोन्ट्रा तेकी जोच। दोंगज़ी पञीरा सोति अनची। दोई कुट्रे "ए भोट, भोट! दूर। पाणी छोड़।" बज़ीरे कुट्रे गे भोट मशुक, भोट देव शुक्क। पञारी सोति कुरचे नांग रिंग इलज़ी। बजीरे कुट्रे राजा रिंग फिरिंग होस्सू कुडू। बज़ीर तिंग ऊं हुड़ रिंग ग्युरकी कूह तावा थाकको नांग इलज़ी। राजा ज़ी कुट्रे दी ताचीप शुतो दि रिंग हुक सिंग सम्पा रांगी चरची। बज़ीरे कुट्रे गे कनूं सम्पा ज़प पा मशुका। कन छता छिते खम्जेपा मशुका। रज़ा रिंग कुडू फीरिंग हौस्सू। दोंग ज़ी जट्टे फीरिंग महोसग से त रज़ा रिंग कुडू गे वाका? राजा ज़ी कुट्रे आलिग बापिताना वादू कुडू। बजीर वापि रंग ञम्पो ञिच्चे एक्क होनती। जड़ी बुटी जंगल बेहड भहते तुपकी चरती। शब जू थलिक्सू गे का चोलताग मनिकताग। दोई त्रुई एक प्याके इच्च एक्क केक् केट्री। तांग दोला पता मदोग्ती। दो रंग क्रपका कुडू। रजा जी कुट्रे क्रापकी चरतू। बजीर क्राप्चे । क्रापी

रांग अम्पो शरू अन्की हड़ खड़ हुन्की चरची। बण बुट भहते बेहड़ा फोन लाक् के लच ची। दोरंग रज़ा ज़ी कुट्रे थक्रप्तु कुडू। गे चोलतग कुडकू। रज़ा ज़ी तांग ला हुन मलई। दो रंग बजीरे कुट्राग गे बदली रांगगा? रज़ा ज़ी कुट्रे इना सुचां फुचां शुकी चरतू। दो रंग बज़ीरे बदली रांग्ये राज़ा जू बेहड़ा सुचां फुचां लक्की चरती। दो रंग रजा फीरिंग होस्सरी। ओहो कुट्रा खेरिंग मशुग कुट्रा। ग्युंग्डुल छेपोन शुद दो रिंग सरग्यदी खाग् छुपतो। इना रिंग ला सरग्येदी खाग् छपतोन। ख्येतिंग स्रुमु पी ड.। खाग छुपतो दो रंग चम्बो रज़ा गुलारिंग को ठींग पीडी। दींग ग्युंग्डुल ज़ी कूह गज़ मुग ताकचे दू रज़ा रिंग इवी मरंटी। रज़ा ज़ी मी तिंग रूकचे दी ठो शाड शाऊंण रिंग मुग तागची अरी शुपपी आस्पी लज़ीप अरी शुप्पी। मी ची कूट्रे दिंग इच्चा नाग तो तो दोई मुग ताक ची तोतो। दोई ये आस्पी लज़ी तोतो रज़ा ज़ी मी तिंग रूकचे दू नाग ख्यांग जोकि तोतो। मीची कुट्रा रे सकर तोतो। दो रंग दू रज़ा दोंग अत्रके अरज़ लचचे कई कूह रात कूह दिन नांग दि मुग खत्म लउ कनिंग गे इन्यू फेद जगा रन्टाग। त कूह रात कूह दिन नांग फोसो हुन्की चरती। दोंग ज़ी रज़ा छोरिंग किरची अत्रकी। आस्की दिंग अत्रके ग्युंग्डूल कचांग अरज़ लचची बे का हठीग सद तोचिन। कनिंग छन्तग तोची। इन्जू फेद हिस्सा ग्युंग्डुल तू रंटी।

(सोमसी, शिमला, जुलाई 1979 से साभार)

–तोबदन

पृष्ठ 23 का शेष

यहां से	इठीं	कब	केएंबे
आज	अज	सब	बदेह
कल, आनेवाला	शुई	कल, पिछला	हिह्
कुछ	अदुह	बिल्ली	बिराई
कुता	कुतुर	चूहा	मूंश
नमक	लौं	मीठा	मिठा
खटटा	अमला।		

–लाल चन्द ढीस्सा

लगभग 20–25 वर्ष पहले श्री लालचन्द ढींस्सा जी से ये नमूने मांगे थे जोकि उनकी अनुमति से यहाँ दे रहा हूं।

–तोबदन

मिलांग तेते

मिलांग तेते गुलारिंग बसीकी तोकिच़। गु–लहा खेरिंग कुट्रि वे गुलारिंग कू–सद वसीकि शुपि। कूसद नांग बदवे क्यांगति मिलांग तेते शुपि।

अलिगशा लो तुंगरिंग गुलारिंग इच़ क्यांगती तोकिच़। दू क्यांगती इच़ रिन्पोछे चौकन तोकिच़। क्यांगती तुंगरिंग बौद्व रवम दोंगज़ी आंसीस कुमिच़। इच़ जाड गुलारिंग (तिचांग) दोट्रो गाटे झड़ (नुकसान) शुमिच़ वे रिदांग–क्युमरे दिरकन नुरकन शुकति इमिची। गुलारिंग नागर तुंग–तुंग तिचांग औन नागरे वे योंगकन ट्रो शुपि, दोंग तोकिच़। दोट्रो गाटे सौदेचन नागर तो किच़ किवे रवन्ट्रीम मतीट्रो। दू नागरांग क्यांगती तुंगरिंग मन्चचि जोकि तोकिच़। इच़ जाड़ दोई नागरंग कुमिच़ वे दोटो गाटे झड़ शुमिन तोतो। तानला नागरची गाणे मकिमच़रे। दोऊ जीरज्ञाग स्रुमु थलांग झड़ अंकी नागर कोवना गोकि च़रमिच़। रिदांग दिरकन–नुरकन शुकि इमिचा। इच़ क्युम गुलरकीरे जेते बचिकी इमिचा। ख्यांग इन्ज़ क्यांगती जोकि तोकिच़रे थलज़ी दू क्यांगती कुमिचा, गी मिलांगपाशुका। ग्यु दुस (काम) शू वे मिरेतींग अन्ची (बचाची), लजी।

आसकी कुमिच़रे गी मिलांगपा शुक, गी मिलांग तेते शुका। औनतोरो इच़ क्युम गुलरकिरे जैते तोकिच़रे। वाकि नागर ग्यु समज़ो (ख्याल) दिरकन नुरकन, कोई लद्दाखज़ी आंसी शुतूरे, कोई रे बौदुंगजी आंसी शुतूरे। खेरिंग कुशी वे तुंगरिंग मितू मिनते छोईरिंग तोच़रे।

मिलांग तेते, सी थलांग मिरेची सद वनाकी च़रमिच़रे। औन मिलांग तेतेऊ थान मिल पागटुंग शुपि। स्रुम ला रिंग कू सद वाते क्यसुम दोरतिंग गुन्चालिंग ईवि। दोंग दरांग वाते सादेरे इन्जतू विचांग (गोगट्री) गोगशी ईवि। मिलांग तेतऊ लबदग ओन यांगपे जोपोतू बलदेव शूग। नागरांगजी इच़ मी, रे–रे सादेतांग जोपि पडीगपी। दोतींग हरूका कुट्रि। ख्यांग सादेतींग यशा छुगति दोंग हरूकरे बाते ईवि।

काफी साल पहले गुन्धला गांव में एक वृद्ध व्यक्ति रहता था। वह सिद्ध था और तिब्बत से आया हुआ था। पुराना गून्धला गांव तिचांग नामक स्थान पर बसा हुआ था जो अभी के गांव से काफी दूर नीचे है और वहां खेत ही खेत हैं। पूरा गांव बर्बाद हो गया और केवल एक घर बचा जिसका नाम गुलरकी है। उस घर के वंशज अभी भी जीवित हैं। उस घर के निकट एक वृद्ध व्यक्ति रहता था जिसने विनाश से पहले गांव वालों को चेतावनी दे दी थी। किसी ने उसकी बात पर गौर नहीं किया। फिर उसने कहा मैं मिलांगपा हूं और मैं मिलांगतेते हूं। यानि मेरा काम जगाना और संदेश देना है।

डा० रन्धीर सिंह मनेपा
तिब्बतयन चिकित्सा अधिकारी
कैलांग।

प्युकर लेक्स

प्यूकर लेक्स भागा गरोक्पोयी रची तफसदो नी। ओथे लेक्स गी जूंड. रो रला तेंगरी ग्रेफ गी केम्प नांड. हेलीकोप्टर छुमेन्चू थांड. नी। पी बींड. ड. बींग दूरे अस्तो प्यूकर लेक्स बोन्ठे सडका मनीजा। ड. बींग दूरे अस्तो मीजो केलंग मंड. अमचा एलदे रो यड.नानी मंगमूर, झोलिंग, छेलिंग लेक्स मंगची दरा ज़म्पा रोची रला वांक्शी गुमलिंग, यूरनद, गुस्क्यार लेक्स मंगची ऐलमेन, यंड.नानी प्यूकर लेक्स थील दो गरोक्पो रोकची तोरंग दो रला ख्वांग छी तेगंरी लेपसला सरका चक्शी केलंग मंग एलमेन रमेन। ओथे तोरंग गोमा बार 1984–85 लेग तो तचूम गुवा। थजूरोगची दूरे नी मंगमूर नांड. दरा ज़म्पा मांगची मेनांड. हीती अमची रहमेन मेन। 2001 साल रो तोरंग कचंगची भागा गरोक्पो रो तारज़म तजी तैयार कैजा। ओथजू रोगची मीजो तोरंग दो एलमेन दोगची छुटकारा कैजा। थजूई साल 2001 रो छुरपग (तांदी) रोक्ची गोरंग, कारदंग, परसप्राग, लपचंग लेक्स मांगची प्यूकर लेक्स बोन्ठे गोमा मोटर गी सडका रे लेपजी लेक्सजो ससती लोई क्यजी थीरजा। दपसंग तोरंग कचंग चू तारज़म प्यूकर लेक्स मंगची तपसदो सक्यद वपशी एलीस नांड. तारजम जीक्चूमचू नौवत रो लेपशी नी। तोरंग, तारजम, नांड. मोटर सडका जी मन्यास रोक्ची दूरे नी प्यूकर लेक्स काला पानी ठोपा नीजा। खासकर थजू वक्ता गुन गी देहडा नोई मूं रास्तो कांगमंगची प्यूकर लेक्स मंग इची हेनला ग्या अस्तो मी थरमेन मेन लोशुम। दूरेगचू कहावत त हेना रे लोशुम कुजूंग ची मी केलंग थरचले प्यूकर मंड. वर वर गूं मथर क जोमेन। छुरपग रोगची प्यूकर सडक गी लम्बाई 12 कि0 मी0 नी।

प्यूकर लेक्स तो चुरगू (19) रवू क्यूम नी। थजू छांई–छांई क्यूम गी मीन हेना नी :– 1 थोलगपा, 2 वरक्यूम्पा, 3 मैलगपा, 4 कीलचोजी, 5 श्वंस छरजीपा, 6 बरचीपा, 7 बरोगपा, 8 टशी चोजी,. 9 छरपा, 10 थयेजी, 11 थरमांग चोजी, 12

आपूचोजी, 13 यला छरजीपा, 14 पांगला छरजीपा, 15 यलाक्स, 16 तेंगरीपा – थेमांग, 17 तेंगरीपा – थरमांग, 18 तेंगरीपा–हवलदार, 19 दोम्बा। प्यूकर लेक्स गी यारतो मंग शा बुटई रवांग इची हेनला नोई नी। पूरा गाहर तो शा बुटा ओख्या मेनांग गुई रे रमेन मेन। प्यूकर लेक्स तो ड.ाई (प्राइमेरी) अस्तो लोकचूमचू मुदरसा नी। ओथे मुदरसा नीस्पी मुन्शी पोस्ट नी थनशे नेस्केर पोस्ट रो नीस्पी मोशी गुआ। लेक्स तो आर्युवेदिक की मनखांग नी। ओथे मनखांग गूं तीकी डॉक्टर, तीकी फार्मेसिस्ट, तीकी दायी, तीकी सेवादार नांड. तीकी पार्ट टाईम सफाई लीचीपजी पोस्ट नी। थनशे ओथे मनखांग गूं सीर्फ तीकी फार्मेसिस्ट नांड. पार्टटाईम केज़ि पोस्ट रो लेनीपा गुआ। प्यूकर लेक्स तो डाकखाना रे नी थजूडं नीस्पी मी लेन तो गुआ। थन्सूंग अक्तूबर – नवम्बर 2004 तो ओथे लेक्स रो बिजली ट्रासफारमर रे लगाई कयारे। ओरशे 2005 रो लेन लीगचा शुरू केयपा हेंजी। प्यूकर लेक्स तो डून्डोई (वेटनरी) मनखांग मनी, ओथेई जन्दर जरूरत लेक्सपा जो दे। 1989 बींग ले तो प्यूकर लेक्स यरतो ची तेंगरी रला अस्तो स्पेन रे लगाई कैजा। सडका मलेपका दूरे लेक्स गी आलू मटर जी ओथे स्पेन दोगची रला वनची गुआ। 2001 बींड. रो सडका लेपचिक्सतोक्ची स्पेन चलाई मलिछा।

प्यूकर लेक्स यारतो प्यूकर गोम्पा नी। ओथ्या तीकी जूंगी तेगोम्पा नांड. चूनिस (12) ले मेमे चोमो जीं ससा ससा क्यूची चोरे गोम्पा नी। जूंगी तेगोम्पा इची हेनला नकई कू (मूर्ति) छोरतेन, थंका, पैचा (पोथी) नी। ओथे छाईं–छाई बोन्ठे शेचा ख्या मुश्किल दे। प्युकर गोम्पई असली पहचान गुरू रिमपोछे कू (मूर्ति) रोक्ची नी। ओथ्या ञीजा (20) ले खरू (फूट) थोई गुरू रिमपोछे कू नी। तयाल गोम्पा खोची ओथे कू गरजा नाना दूसरा नम्बर तो थोई नांड. तेजी रो हेन। ओथे तेजीचू गुरू रिमपोछे सई कू लगभग डुगचू–दूनचू (60–70) बींड. ले दूरे बोद (तिब्बत) रोक्ची गोई चू पोन/मेमे छी जंगशी हेन लोशा। थनशे लेक्स रो गोईचू शंगटे, शंगजी गोई चुशी ओथे गुरू कू जांगशी हीद रार लोशा खला वे जंगचासदो लुम्पई रला ची थजूई बोन्ठे स (मिटटी) केलदे यतो एले लोशा। थनशे नीचू गोम्पा दूरे न दूरे ख्या रमे मेन। ओथे

रेक्चो दूरे लेक्स गी गोम्पा री तो रमेन लोशा। थनशे रे गोम्पा ऋ तो तेगोप्मा नांड. छोरतेन गी खंगरोल (खण्डहर) नी। ओथे गोम्पा गोम्पा ऋ तो न्यासदो जन्धर दूरे हुन्डती ऋ (ग्लेशियर) रजी जूंग गी तें गोम्पा नांड. चोमो मेमे जी गोम्पा शीजी नांड. मी नंन्शी शीची हेन लोशुम। थजुई खोची गोम्पा नूगंची थनशे नी चू जगह रिक्शी हेन लोशा। प्यूकर गोम्पा गोन्धा अवो रिमपोछे चिटारी (मनाली) चू हेनजी। प्यूकर गोम्पा कनझूर पैचा नी। थनशे थे गोम्पा त्रुयी 6 मेमे गुआ :– 1 रिन्चेन मेमे, (थेयजी–झचू झड. (85) बींग), 2 ज्ञालछन मेमे लारजे, (पांगला छरजीपा – दून्चू (70) बींग), 3 जम्बल मेमे, (मैलगपा डुगचू रञा (65) बींग), 4 वांग्याल मेमे (यलाक्स ञपचू ञाशी (52) बींग), 5 रिगजिन मेमे, छरपा–जीपचू रड. (45) बींग), 6 दोरजे मे (वरचीपा – जीपचू जपजी (44) बींग), ओथे मेथे चुतीग (11) चोमो गुआ :– 1 लामा अभी, (प्यसो वरची–पा–दून्चू दोनञा (75) बींग, 2 छोमो अभी, (बरोगपा–दून्चू दोनजी (74) बींग), 3 यांगजीन अभी , (थोलगपा–दून्चू दोनजी (74) बींग), 4 पालजोम अभी , (थरमांग तेगंरीपा – दून्चू (70) बींग), 5 देकिद पालमो अभी, (छेलिंग लारजे – दुन्चू (70) बींग), 6 पालमो चोमो, (थोलगपा – ञप्चू (50) बींग), 7 पालमो चोमो, (यलाक्स – जीपचू जब्दून (47) बींग), 8 पलकीद चोमो, (शंवस छरजीपा – जीपचू जडू (46) बींग), 9 पालमो चोमो, (छरपा–जीपचू (40) बींग), 10 पालमो चोमो, (चोजी टशी – जीपचू (40) बींग), 11 यंगजोम चोमो, (थरमांग तेगरीपा जीपचू (40) बींग)ओथेजी मथे नीस्पी कयूची बूचा :– छेवांग (तेंगरीपा हवलदार चूनीस (12) बींग नांड. तन्जीन (आपू चोजी चूनीस (12) बींड. मेमे लेचा रो दार्जिलिंग मांग थीरशी तद।

प्यूकर लेक्स रो गोम्पा थील नांड. लेक्स यारतो सूमी–पी (3–4) सकेल बुटा खोयोयी चो रो नी। ओथजू जगह स्रवा सद नांड. तंगजर सद रमेन। ओथे सकेल बुटा जी कचंग तेजी वे तीकी थील दो ओथे नेस्पेर सद झी ख्यूंग गम गूं चाजी बुशी रमेन। सद शी रस नांड. छतरी जी लेक्स कील दो सद की सऊरची लयोका क्यूम लिशी रमेन ओनूंग बुशी रमेन। स्रवा सद नांड. तंगजर सद की बोन्ठे दूरेक्ची हेना लोशम :– स्रवा सद दूरे गोमागची लेक्स दो रमेन लोशा। नुनांड. त थनशे लेक्स तो

सद गी बोन्ठे छाछम चू छांई – छांई रो दूरे स्रवा थजुई खोची तंगजर गी मीन वन चूम। तंगजर सद की बोन्ठे हेना लोशुम तल गोमा तोद मांग जिस दो जोए नीजी। कहाक्त हेना रे लोशुम तल नुग लेक्स तो वारी वारी मी वारना जई हेनजी। ञिमती नूंड. लेक्स रो लस्पी तीकी तिकी बुचा तेथी चूकी बारी लेपजी थजू लस्पी सस्ती क्वा जोए हेन लोशुम। दस्तो कुन्चोग साधु कैजी क्वचू लस्पी कचंग रजी खला क्वगे लोकया स्रु शी हेन लोशुम। नुनांड. लस्पी जी छांई शेजी दशी हेन लोशुम। थजु कोन्चोग जी तंगजर सद रो नुंड.ची तोन्जी गरोक्पोंग यूजी थीरशी हेन जी। थजू सद तेंगरी थील दो लेपजी गरोक्पोंग खची लुशी हेन। नुनांड. नुंड. हफता ले खचचूकुंग यनथोनदो मुण्डा क्यजी जोये हेन लोशुम। थजू वक्ता डि.मती तेंगरी थवास तेते तिकी जी नुड. ऐलजी थांगजी सद वनजी तेगंरी इन्जी क्यूमा रीगजी योक्शी हेन। नुंड. सद गी जोत्सा सडका/ अमची रोक्ची थील दो क्यस नांड. तालो सेई कैजी नोत्पा वंशीस नांड. सांई बोन्ठे प्यूकर लेक्स तो प्यूजी थीरशी हेन लाशुम। थनेशे रे तंगजर सद गी क्यूम तेंगरी थवास नुंड. सीचुम। ताल इकतिकीरे नूची केलंग थतींग एलगास तो तेंगरी थवास नूंड एलदे गयून्शी अस्दी एलमेन। तंगजर सद घेपंड. सद की आच्छो रे लोशुम। घेपड. सद नांड. तगजर सद इकतिकरे केलंग थथींग दोद नांड. थजूई खोची ब्रलकास तो चू वगता (रीन) टक्पो पुईदा छोरसुम। तल निस्पी केलंग थथींग दोचा ला खोची तगजर सद घेपंड. सद रो बिलिग अस्तो हमेशा प्यूजा ऐलमेन। घेपंड. सद नीज (2) बींग बन्द योगजला सुम (3) बींग रो आलचूम। तंगजर सद तीकी साल बन्द योगजला नीज (2) बींग रो अलचुम। घेपड. आलचूमचू साल रो तंगजर आलचूमचू बारी मक्यनांग रे आलचूम। स्राव सद तंगजर सद नांड. त्र्यम्पो – त्र्यम्पो आलचुम। स्राव सद लेक्स मांग गेमालन्तो मेनांग वपस्मेन मेन प्यूकर लेक्स रोची फिरे त इकरे एलमे मेन। तंगजर नांड. स्राव आलजला स्राव थजूई जगह जोची थीरचूम। तंगजर प्यूकर लेक्स रो इका अलनांग रे जरूरी एलदे ग्यून्शी अस्दी एलमेन। लेक्सपची रे छांई छी बारी आदर यम्पो बुलाई लीक्चूम। ताल इन्जी थनांग यनानी बुलाई ली नांग कंगमंग लेक्स रो रे.ऐलमेन। इकातिकीरे तंगजर सद लेक्स रोची फिरे कंगमंग ऐलना मैलगपा कैजी तल त्र्यम्पो मी एलमे मेन हीती लेक्स

छांईगिरोक्ची रे रे मी यम्पो एलदे झूनशी रमेन। मेलगपा स्राव की लबदा केसनांग तंगजर फिरे एलजा ला स्राव तो ड.रो चाना सांशु वन्चा गयूसमेन। तंगजर गी लबदा बरचीपा हैन। तंगजर सद की मेम्बा / गुर थनशे झालछन (चोजी टशी) हैन।

प्यूकर लेक्स गरजा नाना लेक्स छांई रोकची पुइदा नी। खासकर शैल त स्वीटजरलेण्ड असदी मेनांग मदे। थजू खला वे ऋ धांग नांड. रवांग ससती तैजी नांड. देयी नी। ऋ नांग धांग तीदे बोन्ठे सोती कमी ख्या मनी। लमा हम्बु/ डुन्डो रो रूवागशा रो रवांग सस्ती तेजी नांड. नोई नी। धगंरा पितांगरो अलचीस रोक्ची डुन्डोजो रूवागशूम रमेन। शूर नांड. शा (बुझपत्र) रवांग सस्ती नी खास कर शा बुटा नोई नी। ओथे शा बुटा गरजा खासकर गाहर नाना ख्या मेनांग गुंई रे मनी। ओथे शा रोक्ची ड.लची छुं थूगपा यचूम चू कची, म्योमेन्चू ड.ल तैयार लिकचूम। मोटर सडक ख्या लेपशी नी, डाकखाना आयुवेदिक मनखांग ड.ायी अस्तो (प्राइमेरी) स्कूल थे छांई नी ख्या नी। लमा कन्चोग नांग स्राव पल तंगजर रो गोमजी ओथे लेक्स रोकचूं छांई मी जो धरूंगरे रे एपो ररे ग्यूद लेक्स धरूंगरे एपो क्यरे गूद।

उरज्ञान छैरिंग मैलगपा,
ज़िला पुस्तकालय, कुल्लू

पुनन की बोली में एक गीत

मसीही धर्म के परचम को हिमाचल और तिब्बत में फहराने का पुखता मंशा लिए तीन कर्म प्रचारक ह्रो–डे, पेगाल और हयेश – के सूदूर समुद्र पार देश जर्मनी के मोराविया प्रदेश से 19वीं शताब्दी के मध्य काल में रोहतांग जोत (13500 फुट) को लांघ कर भीतरी हिमालय के अति दुर्गम क्षेत्र चन्द्रभागा नदियों के उदभव स्थली लाहुल में प्रवेश हुए थे। इन तीन गोरे नवयुवकों को देखकर लाहुल वासियों के मन में भिन्न–भिन्न शंकाएें और विचार उठ रहे थे। अभी दस बारह वर्ष पहले ही एक फरंगी अधिकारी मेजर हये एकवर्ष तक स्पिति में किला डंखर में रहकर आया था। न जाने ये फरंगी गोरे लोग इस देश के देवी–देवताओं को भगा तो नहीं देंगे। इस बात का ज्ञान भी था कि ये लोग हमारे देवी–देवताओं को नहीं मानते हैं। यह भी सोच रहे थे कि हम इन लोगों का कुछ कर भी नहीं सकते। अब इन्होंने कुछ वर्ष पूर्व खालसा सरकार के हाथों से सता छीन ली है। कुल्लू और लाहुल–स्पिति भी अब इनके अधीन है।

कुछ समय लाहुल मे बिताने के पश्चात यहां के निवासियों को इन तीन गोरे आगन्तुकों के आने के कारण का पता लगा। यह लोग मसीह धर्म के प्रचार के लिए अपने देश से सिर पर कफन बांध कर यहां आए हैं। अब इन तीन श्वेत मसीही लामाओं ने केलंग में एक कलेसा का भी निर्माण कर लिया है। और अपने धर्म, यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ कर लिया है। लोगों के भलाई के लिए एक छोटी सी दवाखाना और पाठशाला भी खोल दी है। पाठशाला में लाहुल के बच्चों को भोटी भाषा पढ़ाया जाता था और स्थानीय भाषाओं में गीत और प्रार्थनाएं भी बच्चों को सिखाते थे।

यहां इस लेख के साथ लाहुल के पुनन बोली में रचित गीत, जिसे मिशन पाठशाला में गाते थे, देवनागरी अक्षरों में लिपिवद्ध कर प्रस्तुत कर रहा हूं। ताकि उस समय उन मसीही श्वेत लामाओं के लाहुली बोली के गीत को आधुनिक लाहुल के निवासियों को सुना सकूं।

यह प्रथम प्रयास पुनन बोली के गीत को देवनागरी अक्षर में लिखने का है। उच्चारण आदि में बहुत त्रुटियां रही हैं। संकेतिक लिपि न होने से सुधार कठिन है। फिर भी मैंने महापंडित राहुल सांकष्त्यायन के तिब्बती भाषा के देवनागरी लिपी में लिपिबद्ध किए कुछ लेखों को आधार मान कर यहां प्रस्तुत किया है।

पुनन कद तोग ल–ल

1 ऐ – रड. बुच्च् चे–मेद–शि।
छड. नड. अ–रग म्–थुड. खेग्।
सो–ति बो–टि थुड.–खेग यो।।

2 ऐ–रड. बुच्च् ––––––––।
अवा अ्मइ लबज हेन ग्य थेग।
शड.टे शड.जि ज़ोगे यश् लिक् तेग्।।

3 ऐ–रड. बुच्च् चे–मेद ––––––––
लोगच़ ब्रिच्च ड.म–प् क्य्–खेग्।
तोचि़ पइ चोग–से लि–क्य तेग्।।

4 ऐन्रड. बुच्च ––––––––
स़्लेन ग्रड.लेन चस क्य तेग्।
रिग–दड. लेन तोग बद क्य तेग्।।

5 ऐ–रड. बुच्च ––––––––
जिड.मो थब–मो म्लि क्य् तेग्।
छम–छि थुन–छि दम –शि जोद ख्येग्।।

6 ऐ–रड. बुच्च ––––––––––––
सु–ज् चग–श् दम–शि जोद ख्येग्।
जब्स् तोग चग् नड. क–दर लिख्य! तेग ।।

7 ऐन्रड. बुच्च ––––––––
कोन् चोग् तोग तद–प् लि–ख्य्–तेग।
ड.–तोग् फि–तोग् कोन–चोग लो–ख्य् तेग।।
आमीन! आमीन!! आमीन!!!

रिबोड, नड. शंकुई मिगस।

दुरेग तिकिसेर लई शलई नगनगची सुमी ललाची लुशी एल छो। खमो सुमो लिगजी थरमंड़–थेरमंड. अमचा थुड.जा जोद छो। ञिमा तिकि थजुड. शड.कु तिकि लैपता। ललाची ञमा ज़नदर ग्यर छो। थरमंड. थेरमड. टिड. – टिड. कन शोअग। शंकुजी कद शेचन वनजी लोदता। " हन ञमा गुईची ग्वद ख्याग" थे सक्यद गीई येन व हन ञमा रे गीई ज़मेन येन। व लोशिनी हन ञमगे् ची सु तेजी येन। ललाची सुममेर चुप्पे क्यछी एल छो। ग्यरछी रेगस ते चुग्ता। शंकुजी छाई बसता तेजी चुक ललाची चुमता व थड.गा – थड.गा ललाईचीई श छाई कोकथिरता। क्रेसतां वारका चिगतड़. लोदता " थनता गिई दन क्वसा, खोचुमड. चु लरोग गी तबशी रगेग्। नोवासतो हनजी छोई बोई क्यछि जोद्नी लोद्जी नुड.ची एलजी। ननचुगशी ललाची निसपी छेर जी तेत छो इका शड.कु रजी तल निसपी ज़ला तेत्क्य जोद छो। खोचु माड.चु लरोग तोगना थजु जगतो थजु शड.कु ललाची जी छोलगा–छोलगा हेर नुड. लेपता। शड.कु थड. जी ललाची निसपी बरनड. क्याछी एल छो। शड.कुजी येर कद वनजी लोता हन निसपीई नग्नग ची सु छोई ग्वेग्। थन गीरोग् जनदर ख्रेस रार। ललाची छोई चुग चुमजी सिलिगना जाज़ी खोचुमड. चुग लरोग हेर रगेग लोदजी एल जी। ललाची तिग्की क्येद जी यतो मुईदोग थरमड – थेरमड. अमचा छेरगा जोदची। ञिमाती तालदोग् रिबोड.ती दोदची। रिबोड. जी अंलन कुलता। ललाची जी शड. कुई कचा छाई शद्ता व लोदता खोचुमड. चु लरोग गी पुरशुम जी शड.कु रमेन नी लोदता। रिबोड.जी ललाचीई कचा छाई येनता व लोदता "येनग एरंग निसपी रोअड वई तिकुड. दोएग येन छो। एरड. निसपी दगपो व्यनमो क्यछी जोदखेग। गिजी खलोदजा हन दोग ग्यग्सदे बबकनी। ललाचीजी हो ग्यगसकेक लोदता" व निसपेर थरमड. – थेरमड. अमचा जोद छो। ञिमाती तिपिकची शुगु दुम्बुती खुगता। रिबोड.जी लोदता थजुशुगु कुरची देरा। ललाची जी लोदता ईनी ज़नदर लोबीचन दे। थे शुगु एरड. जोग खलिगचुम। कुरची रा लेन रमेन लोदता। ञिमती येर ताल ञिसपो ञुगु छनभगती खुगता। रिबोड. जी येर लोदता थजु ञुगु पेजी देर ललाची जी लोदता एरड. मलोकचीपा जोग् ञुगु ख लिकचुम। रिबोड.जी ज़िड.ता ' चुपपे जोर, कुरची दोड. लेन रमेन। ञिमती येर थजु शंकु ललाची छोलगा – छोलगा थजुड. लेपता।

ललाची जी ड.रो तदथिरता। रिबोड जी लोदता ग्यर– था– ग्यर छाई ठीक क्यानी। शकु ललाची कचड. रे जुगची रिबोड जी लोदता चुना जोर ईनी गीई फयस येन ललाची रोग् लोद्‌ता थजु जुड.गी पद रई चुक रे। ललाची जी युगना खुगशी चुग शुगु रिजी दता। गीई ञुगुरे रे लोदता युगना थजु दगची ञुगु रिदजी दता। रिबोड. जी ञुगु इनजीई रेचीई बलक कुड. चगजी थजु शुगु लकतोग कुरची व शड.कुरोक लोदता। हेनग हेनजी थे पद गिरोग जुड.दोगची मी क्यड.शी स्रोगता। ख्यग ब्रीशी नी थनसुड. जुड.दोग शड.कुई गु बची ग्युनशी दे रिड.गर। गी इकाची शड.कु छोलगा ञा, मखुकसा। एपो क्यज़ा थन हन ख्यग इनी रजा। नोअग येनचिए शड.कु ग्यरजी छोड.शी ग्रेलदे जुगची। रिबोड. रे शड.कुई खोची ग्रेलची, दरसका येलता। खोरेग एसते रिबोट् छदची एलजी। शड.कु जी खोरेक कनची मेड.शी कनता। रिबोड.जी लोदता जोराओ गीई पऊलाई तस्मा बारचा दचुमगता। नोअग लोचिसतड. शड.कु थजुबसतला ग्योगपा ग्रेलची । नड.ची खोरिग् शड.कु इकारे थजु सक्यद तोक मराजी। येनग लिगजी रिबोड.जी ललाचीई त्रोक क्यब लिगशी येनजी।

नवांग नोरबु कुकुजी

सारांश

इस गीत में बच्चों के लिए शिक्षा दी गई है कि उन्हें कैसे रहना चाहिए और कैसे व्यवहार करना चाहिए। शिक्षा बड़ों के लिए भी है।

गीत में कहा गया है! हम लड़के और लड़कियां छड़, और अराग् न पिएं, पानी और लस्सी खूब पीएं। माता–पिता का कहना मानें, बडे बूढ़े और बूढ़ियों का आदर करें। मिट्टी–पत्थर, खेत–जंगल का काम दिन रात करें, मिल जुल कर बैठें। नहा धोकर रहें और अपने शरीर की देख भाल करें। भगवान में आस्था रखें। सुबह शाम ईश्वर का स्मरण करें।

छेरिंग दोर्जे
गांव वारी तुनी, खराहल
डाकघर, वारी– 175101कुल्लू।

पहृन –मन्चद –मैलोक्स

सञिमिड़, थल्

इ नगरड़, इ रोऊड़ अन्दे। दोरकि इ मेचिमीं दु रोऊड़ो कचड़• अन्जे वर पेट्रिद। महाराज! गे इच्चा लअ कटु मत्ग। गिबि कटु–पटु राऊं। रोऊड़े कुड़ि अइन। दिऊथल्जि गे डड़िरिड़, इल्जे संज्वा ल्होग। रोऊड़ सञिमिड़, थल् दूहे नगरड़, अति। दोई दुहे मेचिमि सेइमि कटुतड़, साते तड.रि। रोऊड़े चेति गियु संज्वा लेई जाणे मेलि। रोऊड़े मेचिमिऊं कचड़, अन्जे रूकृति केनो गक्सा आऊंरे इल्जअ? मेचिमि कुड़ि केनो तुप्सि संज्वा सचि डड़िरिड़, इलजअ।

बलदेव
रापा

चुंमिक्चाड़

इ मी बि बाड़ेतर बे चूं यहोज़िमि बड़ा भारी शौंक। भते धीर फोकिक्ट्रा चूं: गुम्ज़ कुरचा अंवे–भेके हण्णिक्षि बड.ज़ि। दोऊ सेमुड, भई गे भतेबे तक्कड़ा चुंमिक्चाड़ शोग्। बास जी, दि मन्शारड, इ गुरू कचड, चुमिक्सि यहुषि इल्जअ। इ मिना एनो षिन्ड्रद् इ फोआ गुरू किरपा। शुतर शतर दु मी अईन मशहूर चुंमिक्चाड़ शुचे इल्जअ। ग्रांह नगरो मुकाबलतिड, दुए ड्रक्पि। दोऊ घा चुंमिक्चाड़ अरिआ लाकारिड. तड.शि मतोई। दोऊ मिन ए जक्शे इल्जअ – चुंमिक्चाड़।

मिन हुचिरड, फोसो छेपि। चुंमिक्चाड़ो अन्दरेग् घुमण्ड पैदा शुचे इल्जअ – "गुरू जी केन बि मचेसदा केनो चेल्ला केन बे तूरिड, हुचा इल्जअ। ग्यू दल्ते केनो मिन् छजि शुबि लेकि तोअ। दि गप्पा थशे केन बि फखर मश्वादा?" गप्पो रेल्दाड. इझा दोई गुरू बि एनो सेमु गप्पा शचे रन्दु।

चुंमिक्चाडो घमण्ड खाएं गुरू मुस् कुचे वचअ। "ग्यू चेल्लातु विचड.त क भब्बे तक्कड़ा तोतोन। तांल गिबि मचेसअ केई पूरे विद्या यहुषितन। न्हुरे फुगटुड, इ लम तोअ। आई फो दोरड, सा यहुषु । ध्वां में कांह विद्या अधौड़े केषतो।"

चुंमिक्चाड़ ठठ केषा इल्जअ। "गेबे रूठे चुंमिक्चि सड़. अचि तरचि भला?" पितर – पतर दु लमो कचड़. पिचअ। लमे कुतु भई कन्डु एन् तचे क चिच्ची यहुषतोन्?" चुंमिक्चाड़े कलागतु परकंड ठेहकतु। घाह ल केतु सेईत चुं सिद्धा शुजरिड़.। सदमा सुमरिके अईच घाह केतु सेईत तुईकि चूं तक्चि छल्जे केतु।

"दि बे चड़ेह् चि यहुट्रि केई?"

"गेरड़. सा जो।" लमे दु ओईतारे नाड़ड़. लेन्जा शिल्दु। बेदन्जि योड़.खे खण्ड्रिल यहऊ माजि नाड़। इ छिते केड़. – केड, अरनिऊ ढिपि लेकि। लम त शर शराटि अरनिऊ टोईचि जोए चरति। अरनिऊ तग् पिचे न्हुरे बुटरिंड़. इ षेबि घाह केतु। षे झुट खण्णे शुचे षोड़िड़ः। ढिपि रह्षा न्हुरे इल,जे षे जोवा चुमिक्चाडबि हाक् ल्हतु – " ओ धोणार ल्हे कण्डु। "

चुमिक्चाड एनो तुईए यहऊ द्वाके इल्जि। अईत झुट्टे पैहरि रन्दि, अरनि

कोड़.षि ठाहरिक्षिरि। सरे–सस्कु पूहरि डुगे नाड। योंड़. गोह–बेरेतु बिचड़. गड़गड़ाटि बहिकि बेन्डि। दिर–दिर लन चलिकि। रड़.–कोन्ज़ भते डगिग्पि चाजिरे। बेदु जक्चि रंग अरनिऊ टोईचि कोप्पन बड़.जा चरचतु। काकलो ट्रो शोक्सा–शोक्सा ढिपि रहष्षा मसा सग ल्हेपचतु। चुंमिक्चाड सोईऊ ध्याड़ारिड़.ल त्रुग्चा ती। न्हुरे पिपिरड़. लमौ कोन्जतुड़. वड.अ।

लमे दोबि अखीरी शिख रन्दु–

"एनताचे केई केनो तड़.ञ, टीररे, गूदेतिड़. चुंमिक्चि यहुचतन। तोग् बे थल क ग्यू चेल्ला, गे कनिड़. केनबि चुंमिक्चि यहुपोग्।"

अजेय

मातृ शक्ति बीमा योजना

हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही इस महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत गरीबी की रेखा से नीचे रह रही 10 से 75 वर्ष तक की महिला को उनकी मृत्यु या अपंगता जो कि निम्न कारणों से हुई हो, को राहत प्रदान की जाती है।

1. किसी भी प्रकार की दुर्घटना से
2. किसी प्रकार की शल्य चिकित्सा के दौरान मृत्यु जोकि आप्रेशन के सात दिनों के भीतर हो।
3.. प्रजनन के समय किसी प्रकार की दुर्घटना से
4. डूबने, बाढ़ में बहने, भूसखलन, कीट डंक सर्प डंक, भूचाल आंधी तूफान से, बीमाकृत राशि निम्न अनुसार प्रदान की जाती है।

1. मृत्यु पर	25000/-
2. पूर्ण स्थाई अपंगता	25000/-
3.. एक आंख एवं एक अंग या दोनों अंगों की क्षति पर	25000/-
4. एक आंख या अंग की क्षति पर	12500/-
5. पति की मृत्यु पर	25000/-

इसके अतिरिक्त यह योजना विवाहित महिला के पति की दुर्घटना में हुई मृत्यु पर भी लागू होनी तथा 25000/- रूपये की बीमागत राशि बीमा कम्पनी द्वारा देया होगी।

योजना का बीमा सम्बन्धी पूर्ण व्यय सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। योजना का लाभ उठाने के लिए सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारी से सम्पर्क करें।

उपायुक्त एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
जिला सिरमौर नाहन, हि०प्र०

हमः कि–ए नोचुल्पो कथा

तेई–तेई–कू

तोता – तोता कू झुट प्याकु तोई शुचोग कू। दोकूः मिन हमः कि ए नोचुल्पः क्वा। दड. क्वा, नोचुल्पः एनो चल्ले के अच्चा इबि कू। हमः कीः तोइ शुचोग् कू श्रुमु टिग्ल्हिग, दोरड. कू बाडु.ड.।

इझा इ ग्वाह् अन्जः कू दोर। दू ग्वाहज़े कू दोउ टिग्ल्हिग पेट्रि। हमः की–हम की! टिग्ल्हिग रण्ड्रतना छनः? माः खणों, कू। मेह तुकनि कू बुट्ट लोकनि कू बुट्ट थकनि कू, कट्टू ज़कनि कू। नुई बेदचे कू इ टिगल्हिग छड.रि कू थ्वग् कुचे दोउ अड्। एनों टिगल्हिग टुडुक्कन ज़रि क्वा ग्वाहज़े, इलि कू एनो अच्चा। इ ग्यूः बाह्! द झुट्टे टिगल्हिग केश्रिरिकू दोउ। दड. कू ओइरग यहच्वा, ओलः अति कू ग्वाह्। ए भगवान, दड. तुई–ए बेयः खों– द ओलः केई ग्यूः कटु पेट्रि। हमः की –हमःकी। मेह! तुकनि कू बुट्ट लोकनि कू बुट्ट थकनि कू। कट्टू ज़कनि कू। रोउं कू टिगल्हिग। दोइ उइ टिग्ल्हिग छड.रि कू। इलि कू ग्वाह् टिगल्हिग ज़े जा अच्चा। तां धोणरिड. आ कू नोचुल्पः अति। कू अउंहे, अइ झुट टिग्ल्हिग कु? कु रोःजे ग्वाह् अपः कू रोजे टिगल्हिग पेट्रः। मेह् रमोग क्वा, बुटड. लोग्सोग क्वा, बुट थपोग क्वा, कटुरे जोग क्वा। गेह कू बेदचे रें चर्तिगः। रोजे ईः ई ट़िगल्हिग रन्ड्रतग कू। नोचुल्पे कू चिल्हिग्सिनः कः? छल्ले ल्हेइ मर्चि कू दोइ। तोग अपोतो कू दोवि कुड्डु कु मेह ल तुब्तु बुटड. ल लोग्सु ,बुटः ल थदु कू। केइ चिले रन्ड्रतन? मरड्.ग कू ध्योड.ो कटुरे।

तां ओइरग यहच्वा अति कू, लोर–लोर कू ग्वाह। ए हमःकी कू मेह तुकनि कू ,बुट्ट लोकनि, कू बुट्ट थकनि कू कट्टु जकनि कू। राउं कू देखः टिग्ल्हिग। प्याहजे कू मेह ल तुकनि कू ,बुदः ल लोकनि कू बुटःल थकनि कू मरड्.ग कू कनिड.

टिग्ल्हिग। चि ल्हातना ल्होउ कू। ए ग्वाहज़े हन्जे शुभु को कू फूऽऽ फूऽऽ कू। छल्ले तर्तिए मा कू चि फर्सोतो को! इ झुट रहग हन्जे कू ड्वाक् ड्वाक् कुटेक्ट्रः कू बुट। दोल्लः मर्थि कू चि थपोतो बुट दड. कू लोग्सः खेकः ड्रग–ड्रग–ड्रग। छनः तर्चि ग्वाहज़े बुटड. हुचि। छल्ले मर्ति कू।

अचि रेइं कू दि अक्कल कनिड.? कू नोचुल्पे कू। अऊं कू? क्वातो कू धिन्ना इलि एनो, बेन्डिउ अड़ः रिंड. यवातग् क्वाते। म्यों गग्सो नोचुल्पा कू खाणु दोउ, सेः रहुके मेह् चड़.मोग कू। घ्योडे.ा रोजे ईः ई टिग्ल्हिग खोग्सःते कू। इलि कू ग्वाह् अड़ो हकः ! तो कू नोचुल्पा इ र्हगटु टोइचे चोक्कन। केनोः रन्डो नोचुल्पः कू धसड. रहुके मेह् चड़.मोग् कू कः। एन्देगे ज़ोवःतग् कू। ए एन्देगे ज़े चि ल्होन कू रेइ कांः अड. कू रेइ, पठरिड., गेह् तोतोग कू देर लिसा। एके जिर्फि रोउं कू दड. जोउ। तां ग्वाह् कू सेः रहुम्ज़ा हेल्ले चेकतो। तां नोचुल्पे क्वात क्वा–

शर्जः ञिमा शर्जः ञी, ग्वचे खला क्यग्पः चिर्र,
ट्रग्ज़ः ञिमा ट्रग्ज़ः ञी, ग्वचे खला क्यग्पः चिर्र।

तां कू रेइ गोहरिड.–आ एके अति कू। द जोवःतगो कू ग्वाह्ज़े। चि ज़ोन कू अत, रेइ लिसा ए तोतोग कू। एके जिर्फि रोउं कू ट्रोओतो दड. ध्यड.डे. अपोग कू कांह् अड.। दड. ओल्लः कू प्याज़े –

शर्जः ञिमा शर्जेः ञी, ग्वचे खला क्यग्पः चिर्र,
ट्रग्जः ञिमा ट्रग्जः ञि ग्वचे खला क्यग्पः चिर्र।

तां एके ज़िर्जि कू। एके ज़िर्षे ज़र्शे प्योउ कोन्ज़ः युब्सिरि कू पटरिड़.ज़े। आह

चडे. तोउ ओ कू द अपःतगो कांह् अड. कू गेह्। ग्वाह् कू घप्पां आह् चड.ज़ा तो।

नोचुल्पे कू –

शर्जः जिमा शर्जः जी, ग्वचे खला क्यग्पः चिंर,

ट्रग्जः जिमा ट्रग्जः जी, ग्वचे खला क्यग्पः चिर।

नु कू सेह आह् चड़.ज़ा ए। तां प्याह् फन्जे अति कू ग्वाह–उ अड. क्वा चर्र – खी। एनो अच्छा इलि क्वा फन्जे। हा–हा, कू ग्वाह्ज़े, क्यग्पः त क्यग्पः मेठे कू एनः त छोइंघा मेठे तोइ आ!

बेर्चोद ग्वाह् कू आह् यक्चा केश्रा इलिः।

मूल कथा वाचिका – श्रीमति पलकिः,वारी।

संकलन एवं लिप्यन्तरण –सतीश कुमार लोप्पा।

कथा की भाषा – चड़.सो–भाषे (पटनी)

रंग खश्रिनः

अ पौ भा मलैनः, मेमेउ भा मालैनः,
याऔ भा मालैनः वाऊ भा मालैनः
स्वागलो कटु मिन्दिनः, दखतेउ कटु हथिनः,

जीमिंग – शुमिंग क ल सरे खन्नी–दु ल सरे खन्नी,
दोरथल केकुति'ग शुंग्ज़ि अति,

साडी लैके रंग खश्री लैनः
रंगी थुरी लैके फाटी लोगसी लैनः,

चुंग पिपिरंग अपा – मेमेरे दोई अति रे,
गप्पा–पासा मावे छल्ले कुचि मरतिरे,

मुन्जि पाडीउ ठारिरिंग बैड टी पैड़ी
सू दु ठारिरिंग ब्रेकफास्ट पैडी,

जिरग सुमरग तिंग कैकु वोन्डिशी,
वुक्चा कुरचा कैकु वोन्डिशी,

तुई तुई दू थले थले कः
तुई तुई दु थले थले कः

इच्च्व फैरलः केकुई थलका मखणिशी
इच्च्व फैरलः कैई थलका मखणिनः

दखतैऊ कटुई कः रंग रबचे शिलि,
दखतैऊ कटुरंग कः रंग रबश्र इलिनः

शब्द	अर्थ
रंग	रटांग जोत, ला।
दखते	बाहर से।
शुन्ज़ि	समझना
मुन्जिपाडी	घर के जानवरों को गांव के गवाला के साथ भेजने से
	पहले सुबह के समय खुद चराना।
वुक्चा	पोटली
थलक मखनिनः	मुड के नहीं देखना।
रबश्रे	रटांग के उस पार ले जाना।

यह कविता लाहुल के चन्द नौजवानों के बारे में है, जिन्होंने सन 1950–60 के दशक में पढ लिखकर और सरकार की नौकरी पाकर रटांग के उस पार से शादियां की और किसी कारण वश रटांग के उस पार ही हो गए।

बदलाव नियम वद्ध है पर बदलाव दिशाहीन हो वह शायद अच्छा नहीं है। बदलाव अपनी जड़ से, पहचान से और संस्कृति से उस पार ले जाए तो सोचने की बात है।

पहचान व स्वाभिमान, अपने जड़ से बने रहना तथा सफल जीवन के लिए अनिवार्य है।

रटांग के इस पार हमारा सर्वस्व है। हमें अपने उप्र अपनी पहचान पर, अपने संस्कषति पर भरोसा और स्वाभिमान अपेक्षित है। ऐसा मेरा व्यक्तिगत विश्वास है।

प्रेम

''तोदयुले युल–लुग'' (तोद घाटी के लोक परम्परा)

जम्बूलिंग नां ला युल छमचे रू युल–लुग ज़ी योअ्ंनग । युल–लुग ख–नी दे युले चोछुल–बेछुल दंग ज़ेदमा डलरिग छमचे् मीमंग ला पता छा ऩा ।

'लअ्' ढंग 'डोग्मो' दे खेर–दे तोद युले ख्गचन लुग जी् डीऩग। ल्अ दंग लू तेन–दे मना मिमां–ला चोथन मेका़। मिशी–की–दु ची–छमचे् ला आओ–सीरिंग ल्अदंग लुः ते–ना ऩा। ल्अ छोद्चे ठीम–दे, खेरदे कल्फा दंग्पो नी युल–नंग ला योका।

ल्बदा दंग ल्बछोपा दे खेरदे लोनछेनपा ज़ी योअं–ऩा। ल्अ छोज़ग न ल्बछोपे मोनछोल जुग–दे मना ल्बछोपे ल्अ छोतमऩा। ल्अ छोद्चे फिल–ला संगशू, ढंगे, छोदलंग दंग म़रे फोचे् दे खेरदे खग–चन ज़ी ऩा। ल्वदा दंग ल्बछो़।

ञीको फिल–ला नमज़ा–दंग यं्गलुग गोनचे़ दे ख्ग–छेन्मो जी् ऩा। ल्अ सोचे् ज़्गदे ल्तो छ्म्चे् सोआ–ऩा । ल् दंग–लू. दे खेरदे ऩ्का मंग्पो जी् योका़। खंग्पे दंग युले गोनी ल्अ सो–सो तेना–ऩा। फेला, युला, दंग युलासोनाफा, दे खेरदे खगचन लअ् ञिऩा ।

''डोग्मो'' सोचे–दे–खेरदे, बोमो–ए चोआ नः। खंग्पे नंगला या फिता–रू डग (पत्थर) योदकन–दे ल दंग्पो नी खेरदे गोग्मो लुगसो ला सोआ नः। में् फुएदे, लशेन योए दंग छली नंग ला मर ञम्पो छोता़ नः। डोग्मो छोद ज़ न मोन छोल तंना। बोमो छोदकन दे खेरदे बरी दं पोशेल कद दे, चादर करफो गोन दे, छोता न.।

लअ दंग डोग्मो सोचे दे खेर दे मीमंग दंग युले नंगला यरगेद योग्चे फिल ला चोआ न.।

टशी सन्डुप, मण्डी

◆◆◆◆◆◆◆◆◆

तोद घाटी में छोटे बच्चे के लिए प्रयुक्त भाषा

तोद घाटी में बोली जाने वाली भाषा भोटी भाषा की एक बोली है। परन्तु कई कारणों से यह छोटा सा समाज, इस भाषा के प्रयोग करने वाले बडे समाजों से सैंकडों वर्षों से कटा रहने के कारण, इसने अपनी भाषा में कई स्वतन्त्र विशिष्टताएं उत्पन्न कर दी हैं, जिनमें से कुछ तो सुदष्ढ भाषा में भी उपलब्ध होना सम्भव नहीं है। इन्हीं में से एक शाखा है जिसका यहां विवरण दिया जा रहा है। छोटे बच्चों, जो अभी बोलना सीख रहे हैं, के भाषा ज्ञान और विकास के लिए निर्मित शब्द–भण्डार।

पैदा होने के बाद के दूध पीते बच्चों को ओल–ञोग अथवा छुलती (छु–ति) बोलते हैं। बच्चे के विकास को इस समाज ने इस रूप में देखा है।

दुनला दुन – चोग।
ग्यद – सो,
गु–ला तेल।

अर्थात सातवें माह में बच्चा दोनों पैर आगे की ओर फैलाकर शरीर का उपर का भाग खड़ा करके बैठ सकता है। आठवें माह में उस के दांत आने शुरू हो जाते हैं। तथा नवें मास में बड़े आदमी के हाथ के सहारे चल सकता है। इसी समय बच्चा भाषा का आरम्भिक ज्ञान भी प्राप्त करना आरम्भ करता है। तोदपा बोली में इस स्तर के बच्चे के लिए एक विशेष भाषा का विकास हुआ है।

क्योंकि बच्चा आरम्भ में केवल शब्द बोलता है वह वाक्य नहीं बोल सकता अतः यह भाषा केवल शब्दों का भण्डार है। इन शब्दों का स्वरूप ऐसा है कि ये साधारणतया एक अक्षर पर आधारित हैं फिर इन्हें दुहराव दिया गया है। ये शब्द साधरण भाषा के शब्दों के स्थानापन्नक हैं। कुछ नियम इनके अपवाद भी हैं। नीचे ऐसे शब्द दिये गये हैं।

शब्द हिन्दी भाषा में		तोद की भाषा में	तोद की भाषा में
बच्चेकी बोली के शब्द			
1 संज्ञा	कटोरा	को रे	को–को
	रोटी	त–गीर	के–के
	चावल, दाना	डे,यो–ये	ना–ना
	मंस	शा	च–चा
	पानी	छु	छु–छु
	हाथ	लागपा	लऊ
	कपड़ा	गो–लाग	पो–बो
	पैर	कांड़्.पा	कांड़्छुड़्
	थुकपा	थुकपा	ळुर
	कुत्ता	खी	बऊ–बऊ
	मेढा	ट्टुा	ज्हिम
	गाय	ब्लंग	पोड.–ड.ो
2 क्रियात्मक संज्ञा		सेना	ञलचे
त–ती			
	पेशाब जाना	थ्चन	छी–छी
	पाखाना	क्यागपा	अ–खा
	बैठना	दद–चे	चौग

उठना	लाङ.–चे	ळोब
नचना	से–चे	चै–चै
न्हाना	जुगफो ठुदचे	ती–सू ती–सू
थगरना	डिलचे	धिम

3 विशेषण

गर्म	छन्ते	अ–छी
ठण्डा	डाङ्मो	अ–छु
डरावना	जिगरी	अ–माऽ
गन्दा	सोगपो	अ–खा
सुन्दर	देमो	अ–ला
		अ–नू

4 रिश्ते, सम्बन्धी बोधक शब्द :–

ऐसे शब्द साधारण भाषा से भिन्न नहीं हैं। यद्यपि इन शब्दों का प्रयोग बच्चा अधिकतंम करता है। इसका मूल कारण यह हो सकता है कि ऐसे शब्द साधारण भाषा में भी बोलना कठिन नहीं है। ये शब्द छोटे हैं, एक या दो अक्षरों पर आधारित हैं। कई शब्द तो मनुष्य की स्वभाविक आरम्भिक ध्वनी अथवा वर्णमाला के प्रथम स्वर अ से आरम्भ होते हें। उदाहरण देखें :–

माता	अ–मा
पिता	अ–बा
दादा	मे–मे
दादी	अ–बी
बुआ	आ–ने
चाचा	अ–कु

भाई, सबसे बडा	अ–चो
भाई, सबसे बडे से छोटा	चो–चो
बहन सबसे बडी बहन से छोटी	अ–पु
छोटा भाई	नो
छोटी बहन	नो–मो
बहन (सबसे बडी)	अ–ची

उपरोक्त शब्द, बच्चों की भाषा के शब्द, हमने नागरी लिपि में लिखा है। ये शब्द क्यों कि मूल भोटी भाषा के शब्द नहीं है, अतः इनमे हिज्जों का बन्धन नहीं है। इस लिये ध्वन्यात्मक लिप्यान्तरण से अर्थ में दोष नहीं आता है।

–तोबदन

སྲན་མའི་གླིང་།

སྲན་མ་གླིང་ནི་ཡུལ་ཙུ་ཏུན་ཞིག་ཡིན། ཡིའི་མིང་ལ་སྲུན་མ་སྲན་མའི་གླིང་ཟེར་ཅེན། ཏག་སམ་ནི་མི་ཚང་མས་ནེ་གླིང་ཟེར་ཅག །ཡི་ཡུལ་དེ་ནི་ཟྲི་ལྐ་ཀར་ཞུའི་ཀོ་ཁྲི་ཁོག་གསརའི་ནང་དུ་ཡོད། ཀར་ཞུའི་ནང་དུ་ཀོ་ཁྲི་བཅུ་བཞི་ཡོང་ཅེན། ཧེ་ནང་ནས་ཀོ་ཁྲི་ཁོག་གསར་ནི་ཀར་ཞུའི་ཤར་ཕྱོགས་ལ་ཡོད། ཀར་ཞུ་ལ་ཉུང་ཧི་པ་དང་། རྒྱ་གར་པའི་མིཏུང་ཀྱི་ལྐ་ཏུལ་ཟེར་དེ་འབོད་ཅག ཡིན་ནའང་བོད་རིགས་མི། ལ་ཏྭགས་པ། ཟངས་དཀར་པ། སྤྱིཏི་པ་དང་རྒྱ་གར་ཁམས་པཙུང་ཀྱིས་ཡུལ་ཡི་མིང་ལ་ཀར་ཞུ་ཟེར་ཧེ་འབོད་འདུག

ཁོག་གསར་ཀོ་ཁྲི་ནང་ལ་གྲོང་པ་གསུམ་ཡོང་ཅེན། ཧེཙུང་ཀྱི་མིང་ནི་ཁོག་གསར། འགྲམ་ཕུག་དང་སྲན་མའི་གླིང་ཡིན། སྟོན་མ་ཁོག་གསར་དུའང་དབྱརའི་ཁོག་གསར་ཟེར་དེ་ཡུལ་གཞན་མ་ཞིག་ཡོང་ཅེན་ཟེར་ཅག ཧེ་ཡུལ་དེ་ནི་ཏག་སམ་སྟོངས་ཧེ་མེད། ཏག་སམ་ཡུལ་དེའི་ཁང་རོལ་ཡོད་ས་ལ་ཚོཧྟེ་ཟེར་དེ་འབོད་འདུག

ད་ང་དེ་རིང་ཡུལའི་མིང་ལ་ཧེ་གླིང་ཟེར་འདུག ཡུལའི་གཞུང་ལ་གྲོག་པོ་ཆེན་མོ་ཞིག་ཡོད། ཡི་ཡུལ་དེ་ནི་གྲོག་པོའི་ཕར་ཚུར་དུ་འཚུགས་དེ་ཡོད། གྲོག་པོའི་ཕར་ཀ་ལ་སྟོན་མ་ཁང་ཆེན་དྲུག་ཡོང་ཅེན། དེའི་མིང་ཙུང་ནི་དབར་ཁང་། དབར་ཁང་རྒྱབ་མ། སྤྲང་ཏུང་། གོང་མ། ཁ་ཐོག་གོང་མ། དང་སྣ་རྫོབ་ཟེར་ཅེན། ལུང་པའི་ཚུར་ཀའི་ཁང་པའི་མིང་ནི་གསར་ཁང་། འཇམ་དབྱངས་གླིང་། ལེགས་གླིང་། མཁར་ཅོད། མཁར་ཅོད་གོང་མ། པོག་ཅེ་དང་རང་ཅེ་ཟེར་ཅེན། ད་ང་དེ་རིང་ནི་ཁང་པ་ཚང་མའི་ཨ་ཅོ་ནོ་བཀོད་ནས་གྲོང་པ་བཞི་བཅུ་ཟམ་སོང་དེ་འདུག ཁ་ཐོག་གོང་མ་དང་རང་ཅེ་པཙུང་ནི་ཧེང་ཞིག་ནས་ཡོང་དེ་ཡི་ཡུལའི་ནང་དུ་འཚུགས་དེ་ཡིན། རང་ཅེ་པཙུང་ནི་བོདའི་ས་མཚམས་ནས་ཡོང་སྟོད་མཁན་ཡིན། སྲན་མའི་གླིང་དང་རང་ལོའི་གཞུང་དུའང་གྲོག་པོ་ཤང་ཤང་ཞིག་ཡོད། ཡི་གྲོག་པོ་ལ་ཆུ་ནི་ཉུ་ཏུན་ཞིག་ཡོང་ཅེན། ཡིའི་མིང་རངའི་སྐད་ལ་པོ་ལུང་པ་ཟེར་ཅེན། ད་ང་དེ་རིང་ཡི་ལ་སྣྲགལ་ནྲ་ལྔ་ཟེར་དེ་མིང་བཏགས་དེ་འདུག

སྟོན་མ་སྲན་མའི་གླིང་དུ་དགོན་པ་ཡོང་ཅེ་མན། ད་ང་དེ་རིང་ཡོད་མཁན་དགོན་པ་ནི་ཧེང་ཞིག་ནས་བཞེངས་ཧེ་ཡིན། སྟོན་མ་ཡུལའི་དགོན་པ་ནི་རང་ལོ་ཀོ་ཁྲི་མཉམ་དུ་ཡོང་ཅེན། དེ་དགོན་པའི་མིང་ལ་ལབ་རང་དགོན་པ་ཟེར་ཅེན། ལན་པོ་གཅིག་ཡུལ་གཉིས་མ་འཚམས་མ་འགྲིགས་ནས་སྲན་མའི་གླིང་པཙུང་མཉམ་དུ་དགོན་པའི་འབྲེལ་པ་བཅད། དེའི་ཧེང་ནས་སྲན་མའི་གླིང་པཙུང་ཀྱིས་ཡུལ་དུ་དགོན་པ་སོ་མ་ཞིག་བཞེངས། ལོ་འགའ་ཅེན་ཞིག་ཧེང་ནས་ཡི་ཡུལའི་དགོན་པ་ཙ་བོད་པའི་སྤྲུལ་པ་རིན་པོ་ཆེ་ཞིག་བྱོན། ཁོང་གི་མཚན་བརྟུལ་ཞུགས་གླིང་པ་ཡིན། ཁོང་ནི་ཧྲེང་

མའི་བླ་མ་ཞིག་ཡིན་ནས་དགོན་པ་དང་ཡུལ་འདི་མི་མང་ཚང་མ་སྙིང་མའི་ཆོས་ལུགས་བརྟེན་བྱས་འགོ་འཛུགས། སྤྲུལ་སྐུ་རིན་པོ་ཆེ་དེ་ཀྱིས་ཡུལ་མི་ཚང་མ་ལ་ནང་པ་སངས་རྒྱས་ཡི་ཆོས་དང་བསླབ་བྱ་ཀྱི་སློ་ཞིག་བཏང་། ཡུལ་འདི་དམག་སིག་རིད་འབྱུང་མཁན་ཚང་མ་ལ་དམག་འབྱུང་བྱས་བཅད་བཅུག མ་ཏི་དང་ཁ་འདོན་བཏང་བྱས་བསླབས། ཡུལ་འདི་ནང་དུ་མི་མང་པོ་ཞིག་གྲྭ་པ་དང་ཇོ་མོ་བྱས་བཅུག   དགོན་པ་ཊ་བུམ་འཁོར་ཚེ་བཅུ་(རྟུ)དང་འཆམས་ཡང་བཙུགས། དགོན་པའི་མིན་ལ་བསམས་གྲུབ་ཆོས་གླིང་ཟེར་དེ་བཏགས།

ཡང་ལོ་འགའ་ཆེན་ཞིག་ཧིང་ནས་སྤྲུལ་སྐུ་རིན་པོ་ཆེ་དེ་ཀྱིས་ཡུལ་འདི་མི་མང་པོ་ཞིག་སྤྲས་ཡུལ་ལ་འཁྲིད་དེ་ཕྱེར། ཡིན་ནའང་བླ་མ་རིན་པོ་ཆེ་དེ་ལམ་ཞིག་ལ་གྲོངས་སོང་། དེ་ཡུལ་མིའུང་སྤྲས་ཡུལ་ལ་སླེབ་མ་ཐུབ་དེ་ལོག་སྟེ་ཀར་ཞུ་རུ་སླེབས། ཇོ་ཇེ་གཡུ་སྒྲོན་མ་དི་སྟུན་མའི་གླིང་ཡུལ་འདི་སྟུང་མ་ཡིན།

བཟུར་སྐྱི་ལུལ།

प्रचलित शब्द (उच्चारण)	मूल शब्द
མིན།	མིང་།
སྲུར་མ། སྲིར་མ།	སྤོར་མ།
ཚུ་དུར།	ཚོང་དུ།
དག་སམ། དག་སང་། ངག་སང་།	དེང་སང་།
ཡི། ཡིར། དེ།	འདི། འདིར། དེ།
མི་ཙུང་། དེ་ཙུང་།	འདི་ཙམས། དེ་ཙམས།
ངང་དེ་རིང་། ངང་དེ་རིང་།	དེ་རིང་སང་།
ཨ་ཙི་ཙོ། ཙུ་དུར།	ཨ་ཙི་ཙུ་པོ།
བཞངས།	བཞེངས།
ཡར་ཟོ་གཅིག	ཡར་གཅིག
ཟོ་མ།	གསར་པ།
འགའ་ཆེན། འགའ་ཆེན་ཞིག	འགའ་ཞིག
ཚེ་མ་ཁྱུད།	ཟླས། མ་ཐུབ།

དགུ་ངར་ (ཀྱམ་ཅར) འདོད་རྩེའི་ལུགས་སྲོལ།

སྟོན་མ་གར་ཞ་སྟོད་སྟོགས་ཀྱི་ཡུལ་ཁག་ཁ་ཤས།
ཞང་ཡུར་མའི་སྐབས་དགུར་ཀ་ཚར་རྒྱུ་རྒྱལ་འབབ་རྩེ་
དང་སྟོན་ཐོག་རྒྱལ་ཐོན་རྩེ་དང་གཞན་ཡུལ་ཚང་བཞུགས་
ཡོད་པའི་ནང་གཏོར་དགུ་ངར་བདུད་སྟོད་ཆེན་ལ་སོགས་
པ་ཡུལ་ནས་བརྩེད་རྩེ་སྤྲོ་ལ་འཛོམ་ཆེན་པའི་
ལྷ་དང་ཀླུ་སོགས་མཆོད་རྩེའི་ལུགས་སྲོལ་འདུག།
དེ་སྐབས་དམར་ཚོད་ཡང་བཏང་རྩེ་ལུགས་སྲོལ་
ཞིག་འདུག། དེ་ལ་དགུ་ངར་དོད་རྩེ་ཟེར་ཡོད་པ་ཡིན།
སྟོན་མའི་ལུགས་སྲོལ་དེ་དང་སང་ཁམས་ནས་མེད།
ལས་ལུགས་དེ་ཁམས་ནས་དུ་ལམ་ལོ་བཞི་བཅུ་
ལྷག་ཙམ་ཆགས་འདུག། ཡིན་ན་ཡང་ལུགས་སྲོལ་
བཟང་ངན་ཅེ་ཞིག་ཡོད་ཀྱང་ཨ་ནི་རང་ལྟ་བུ་མི་མ་
ཀུན་གྱིས་བསྟུན་པའི་རིག་གཞུང་གི་ཡན་ལག་ཞིག
ཡིན་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད། དེའི་སྐོར་ཤེས་དགོས་
ཤེས་མི་ཀུན་ཕག་ཅན་ཞིག་ཡིན། ཚེ་ལ་ཞེན་སྟོན་མའི་
ལུགས་སྲོལ་བཟང་པོ་ཀུན་སླད་དགོས་རྩེ་དང་།ངན་
པ་ཀུན་སྤང་དགོས་རྩེས་དེ་ནས་ཀྱང་ཁག་ཅན་ཡིན།
ཕལ་ཆེར་ལུགས་སྲོལ་འདི་སྟོན་མའི་ལུང་པའི་

ཆོས་ཡང་ན་ནང་ཆོས་དར་བའི་སྔོན་གྱི་ལམ་ལུགས་ངན་པ་ཞིག་ཡིན་པ་ལ་ཐེ་ཚོམ་མེད།

སྔོན་མ་མི་མང་ཀུན་ཤེས་ཡོན་མེད་དེ་རང་དང་འཚོ་བ་དང་མི་ཚེ་རྒྱལ་ལ་ཞིག་ཡོང་ཙེ་ཡུལ་ལ་འཇིག་རྟེན་པའི་ལྷ་དགེ་སྲུང་དང་བདུད་བཙན་སོགས་གཙོ་ཙེ་དང་དེ་ཀུན་འཚམས་པའི་ཡུལ་ལ་དམར་མཆོད་སོགས་བཏང་ཙེ་ཐེ་ལུགས་སྲོལ་ངན་པ་ཀུན་དང་། ཡིན་ན་ཡང་ལུགས་སྲོལ་ངན་པ་འདི་ཉམས་ནས་མེད། མི་མང་ཆེ་བ་ཞིག་འདིའི་སྐོར་ཅ་ལམ་ཤེས་མེད། དེ་སེ་ཡུལ་ལ་ངས་ཀོ་ལོང་སྐུ་ཞབས་ཨ་ཞང་དབང་རྒྱལ་ལགས་གཙན་དེ་འདིའི་སྐོར་གསུངས་མཛད་ཞེར་དེ་ཞུས་པན། ཁོང་གིས་གསུངས་པ་ལྟར་རྩོམ་ཤིག་འདི་བྲིས་ཡོད།

ལམ་ལུགས་འདི་ནང་ལ་ཡུལ་ཀོ་ལོང་ནས་དགེ་སྲུང་གར་བཞི་ཡུལ་ཁག་ཁ་ཅིག་གི་ཡུལ་མི་ཀུན་འཛོམས་ཏེ་ལྷའི་རྒྱལ་པོ་སྲུང་མ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་པ་ཁ་ཅིག་འབོད་ཏེ་ལྷ་འཁབས་རེས་ལོ་དེར་དཔྱར་ཀ་ཆར་རྒྱུ་དང་སེར་ཐོག་རྒྱལ་ཐེར་ཙེ་ཡུལ་ལ་འདི་བ་འདི་ལྟར་སོ་ནམ་མང་པོ་བཙས་ཏེ་དམར་མཆོད་བཏང་བའི་སྲོལ་ངན་ཞིག་འདུག། དེ་ལ་དང་པོ་

སྔ་རུང་དཔྱག་པའི་མདུར་ཁམ་ནས་རྒྱུ་ཞིག་འཁྱུར་དེ་ཁྱུ་
འཁྱལ་བཞིན་ཁང་གསར་རྒྱུད་ནས་དགེ་སྐྱུར་བར་སླེབས།
དེར་རེ་རྒྱུ་དམར་ཚོད་བདང་། དེ་ནས་དགེ་སྐྱུར་དུ་"ཞིན་དེ་"ཞེར་
ནས་ཡུལ་མི་ཀུན་ལ་ཚད་བདང་རྩེའི་ཁྱུགས་སྒྲིག་ཡོད་
འདུག་ཡས་གཏོང་ལ་རྩེ་སྐྱུར་ཡུལ་པའི་ཞིན་དེའི་ཚང་བཀག།
དེ་ནས་གཏོང་ལ་ཁང་གསར་ཡུལ་པས་ཞིན་དེའི་ཚད་བདང་
སྒྲིག་ཚོགས། དེ་སྐབས་ས་རང་ནས་དགེ་སྐྱུར་བར་དེ་
ནས་ཡང་ལོག་སྔེ་ས་རང་ནས་ཀོ་ལོང་བར་ལྷ་ཡ་ཀུན་
ཁྱུ་བཞུགས་བཞིན་ཡུལ་མི་དང་ཡུ་ཡུ་གུ་ཀུར་ཤུས་ཡ་
དང་སྐད་ཆེན་པོ་ཇ་ཁུ་སོགས་སྐད་འདུ་མིན་གཏོར་ར་
ནས་ཁྱེར་སྒྲིག་འདུག། ས་རང་དུ་ཡང་སླེབས་དེ་ལུག་གཅིག
འཁྱུར་ནས་སྐད་ཆེན་ཇ་ཁུ་ཤུས་ཡ་སོགས་གཏོར་སྔེ་ལོང་
དུ་ལེ་ཁེལ་ཐག་ཞེར་སའི་ས་ཚ་དུ་སླེབས་ནས་དམར་
ཚོད་བདང་སྒྲིག་ཞིག་འདུག།

དེ་ནས་དགུ་ངན་དེང་ཞོར་རྟེང་གི་ལོ་གསུམ་
ཡར་ལ་ཀོ་ལོང་ཡང་དཀར་པའི་སྐུང་མ་དེང་སང་མ་སྐུང་
ཨོག་ཇ་ཏེ་ཤུས་ཡོད། རྩེན་མ་ཡར་ཀའི་ཐག་གྲིན་
ཤུས་ཡོད་ནས་འདོད་སྒྲིག་འདུག་ཡས་དེ་གཏོར་པའི་
སྒྲིག་ལ་ལུག་གཅིག་དམར་ཚོད་བདང་རྩེའི་ཁྱུགས་སྒྲིག
འདུག།

—འཕྲེང་པས་རྣམ་རྒྱལ།

ག་རྗོག་ཞང་པོ་ཞིག་གི་སྒྲུང་།

ག་རྗོག་ཞིག་ཡོད་ཀག། ཐམ་པོག་གཅིག་ཁོ་ཡ། སྐྱེས་དེ་མང་ཚོར་རོག། ཁོ་རྒྱ་བཙལ་ལ་ཡོང་པོང་ངོ་ ལ་མང་པོ་འཁོར་རོག། དེ་ཟ་ར་ཚོད་པ་མང་པོ་ཡོད་ཀག། ཁོ་ལ་ག་དུའང་རྒྱ་མ་རྙེབ་རོག། ག་རྗོག་ཐག་རིང་ལ་ཐོར་སོང་རོག། དེ་རུ་ཁོ་ཡ་རྫ་མ་ཞིག་མཐོང་སོང་། ཁོ་སེར་འདུ་ཐད་སོང་། ཡང་ན་རྫ་མ་འདི་ནམ་ནང་རྒྱུ་ཅང་དུར་མར་ན་མི་ཐུབ། "ང་ངས་རྒྱ་རྩུག་ལ་འཁྱུང་སོང་" ག་རྗོག་གིས་བསམས། དེ་ནས་ཁོ་ལ་ཐབས་ཤེས་ཕྱུང་སོང་། རྡོ་རུག་འདུས་སོང་། རྫ་མ་ཕྲེམ་བཀང་། དེ་དང་མཉམ་པོ་རྒྱ་ཁབ་རོག་ཐོར་པོ་ལ་ཡོང་སོང་། ག་རྗོག་གིས་ཐད་དེ་ཆུ་འཐུང་སོང་། དེ་རང་མཉམ་པོ་ག་རྗོག་ཁྲུར་དེ་སོང་ངོ་།

– སྟོབས་ལྡན།

लघु बचत, मण्डी – जिला मण्डी (हि0 प्र0)
''आज की बचत कल की मुस्कान''

धन सुरक्षित रखने का एकमात्र साधन –

आपका बड़ी मेहनत से कमाया धन यदि डाकघर राष्ट्रीय बचत योजनाओं में लगाया जाता है तो यह सबसे सुरक्षित होता है। निवेश पर सबसे अधिक ब्याज़ प्राप्त होती है। राष्ट्र एवं प्रदेष की प्रगति में आप भागीदार बनते हैं।

अभिकर्ता बनकर आप स्वरोज़गार भी बन सकते हैं –

यदि आपने दसवीं कक्षा पास की है, आयु 18 वर्ष से कम नहीं है, किसी सरकारी सेवा में कार्यरत नहीं है तो आप अभिकर्ता बनकर अपने प्रयत्नानुसार धन भी कमा सकते है।

आयकर से राहत पाने हेतु –

राष्ट्रीय बचत पत्र आठवां निर्गम या 5 बर्षीय लोक भविष्य निधि खाता में निवेश करके आप आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

अन्य योजनायें –

डाकघर में प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्यनुसार विभिन्न योजनायें हैं जिसमें आप अपना धन निवेश करके लाभ उठा सकते हैं। जैसे किं किसान विकास पत्र, मासिक आय योजना, सावधि ा जमा खाता, आवर्ति जमा खाता इत्यादि।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –

1 निकटतम खण्ड विकास कार्यालय
2 निकटतम डाकघर या लघु बचत अभिकर्ता

अली रज़ा रिज़बी
आयुक्त एवं अध्यक्ष
लघु बचत मण्डी

आज की बचत

लघु बचत योजना

कल की सुरक्षा

अपने परिवार के सुनहरे भविष्य तथा राष्ट्र व प्रदेश की खुशहाली के लिए लघु बचत योजनाओं में अधिकाधिक राशि जमा करवाकर महत्वपूर्ण योगदान देवें:–

1	किसान विकास पत्र	आठ वर्ष सात मास में दुगना। समयपूर्व निकासी एवं नामांकन की सुविधा।
2	डाकघर मासिक आय योजना	आठ प्रतिशत ब्याज प्रतिमाह देय। इसके अतिरिक्त छः वर्ष पश्चात दस प्रतिशत बोनस देय।
3	5 वर्षीय आवर्ती खाता	7.5 प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज। 50 रूपये के खाते तक जीवन बीमा की सुविधा।
4	6 वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र	8 प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज। आयकर की धारा 88 के अन्तर्गत आयकर में छूट।

दसवीं पास बेरोगार महिलाओं के लिए विशेष आकर्षण

आज महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना के अन्तर्गत एजेंट बन सकती हैं। इस योजना के अन्तर्गत 4 प्रतिशत कमीशन देय है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

1 अतिरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट कुल्लू।

2 लघु बचत अभिकर्ता ज़िला कुल्लू।

उपायुक्त एवं अध्यक्ष,
ज़िला कुल्लू।

◆◆

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण कुल्लू के माध्यम से चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की वर्ष 2004–2005 1.04.2004 से 20.02.2005 तक की एक झलकः–

क्र0सं0	कार्यक्रम का नाम	लक्ष्य वर्ष 2004–05	उपलब्धी	प्रतिशतता
1	स्वर्णजयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (एस0जी0एस0वाई) (ऋण वितरण)(लाखों में)	89.60	67.97	76
2	लाभान्वित परिवारों की संख्या	–	251	–
3	सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना (कार्यदिवस लाखों में)	–	2.59	–
4	इन्दिरा आवास योजना (नये मकान)	201	62 पूर्ण 139 प्रगति पर	100
5	इन्दिरा आवास योजना (अतिरिक्त मकान)	46	31 पूर्ण 15 प्रगति पर	100
6	इन्दिरा आवास योजना (अपग्रेडेशन)	80	30 पूर्ण 50 प्रगति पर	100
7	श्राजीव गांधी आवास योजना	397	71 पूर्ण 326 प्रगति पर	100
8	(क) वाटरशैड की संख्या	–	33	–
	(ख) क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	–	19294	–

(आर0 डी0 नज़ीम) भा0 प्र0 सें0
उपायुक्त एवं मुख्यकार्यकारी अधिकारी,
डी0आर0डी0ए0 कुल्लू। (हि0 प्र0)

(वी0सी0 भण्डारी)
परियोजना अधिकारी,
डी0आर0डी0ए0 कुल्लू। (हि0 प्र0)

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, बिलासपुर द्वारा संचालित योजनाओं का संक्षिप्त विवरण:

1 **स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना :**

इस योजना का उदेश्य गरीबी की रेखा से नीचे बसर कर रहे परिवारों को गरीबी की रेखा से ऊपर उठाने हेतू लोगों को समूहों में या व्यक्तिगत तौर पर स्वरोज़गारित करना है। वर्ष 2004–05 में योजना के अन्तर्गत सरकार द्वारा इस जिला के लिए अनुदान राशि के साथ साथ 136.74 लाख रूपये ऋण वितरण का लक्ष्य निर्धारित है लक्ष्य पूर्ण कर लिया गया है।

2 **सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना :**

योजना का मुख्य उदेश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोज़गारों को रोज़गार उपलब्ध करवाने के साथ साथ आवश्यकता अनुसार ढांचागत विकास करना है। योजना स्वभाव से ही लक्षित है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में कोई भी जरूरत मंद व्यक्ति रोजगार के बिना न रहे तथा सभी मज़दूरों को उचित दरों पर अनाज उपलब्ध हो।

3 **इन्दिरा आवास योजना:**

कच्चे से पक्का निर्माण :–

इस योजना के अधीन गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले ऐसे परिवारों को जिनके आवास जीर्ण अवस्था में हैं की मुरम्मत हेतू 12500 रूपये का अनुदान प्रति आवास दिया जाता है। वर्ष 2004–2005 में ज़िले में 85 आवासों का लक्ष्य सरकार ने निर्धारित किया है।

4 **गोल्ड माईन परियोजना :**

ज़िले में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों की आर्थिक दशा में सुधार लाने के उदेश्य से र्स्वणजयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत विशेष घटक योजना गोल्ड माईन नाम से भारत सरकार द्वारा वर्ष 2000–01 में जिले के लिए मु0 840.35 लाख रूपये की स्वीकृति हुई जिसमें 327.76 लाख रूपये अनुदान व 512.259 लाख रूपये ऋण स्वरूप रखे हैं। परियोजना के अन्तर्गत पुष्प उत्पादन गतिविधि में 200 कष्पकों को, मशरूम उत्पादन गतिविधि में 200 कष्पकों को व रेशम उत्पादन गतिविधि में 500 कष्पकों को लाभान्वित करने का लक्ष्य है।

5 **सुखा ग्रस्त क्षेत्र कार्यकम :**

यह कार्यकम वर्ष 1995–96 से आरम्भ हुआ है। शीर्ष के अन्तर्गत आठवें वैच तक 81 जलागम तथा हरियाली के अन्तर्गत 24 जलागम पंचायतों के लिए स्वीकृत हुए हैं इसमें 2860 लाख रूपये प्राप्त होंगे। अभी तक 830 लाख रूपये व्यय करके 13446 हैक्टेयर क्षेत्र उपचारित किया गया है।

परियोजना अधिकारी,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण,
जिला बिलासपुर हि0 प्र0

उपायुक्त एवं मुख्य कार्यकारी
ज़िला ग्रामीण विकास अभिकरण
बिलासपुर ज़िला बिलासपुर हि0 प्र0

वर्ष 2004-05 की उपलब्धियाँ

जिला ग्रामीण जिला विकास्स अभिकरण, चम्बा जिला चम्बा के गांवो की विकासात्मक सूचना।

केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकार की विभिन्न ग्रामीण विकास व गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के कार्यन्वयन के लिए चम्बा जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चम्बा की वर्ष 2004-05 की जनवरी-2005 तक की उपलब्धियाँ निम्न प्रकार से है:-

बी0पी0एल0 परिवारों के उत्थान के लिए :

1. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के अर्न्तगत वर्ष 2004-05 में मास फरवरी 2005 तक 270.428 लाख रूपये का ऋण तथा 79.437 लाख रूपये का अनुदान दिया गया।
2. इन्दिरा आवास योजना के अन्तर्गत फरवरी 2005 तक 134 मकानों को पूर्ण किया गया तथा 43.991 लाख रूपये की धन राशि व्यय की गई! 72 मकान अभी तक निर्माणधीन है। इसके अतिरिक्त 47 कच्चे मकानों को पक्का किया गया तथा 7.790 रूपये की राशि खर्च की गई।
3. सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के अर्न्तगत 299500 कार्य दिवस अर्जित किए गए हैं तथा 341.109 लाख रूपये की धन राशि मजदूरी तथा गैर मजदूरी पर व्यय की गई है।
4. राजीव गांधी आवास योजना के अन्तर्गत वर्ष 2004-05 में 246 मकानों को निर्मित किया गया तथा 112.840 लाखं रूपये की राशि व्यय की गई है अभी तक 292 विभिन्न विकास खण्डों में निर्माणाधीन है।
5. ऋण एवं आवास योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत 38 लाभार्थियों को 4.230 लाख रूपये की अनुदान राशि तथा 12.400 रूपये का ऋण प्रदान करके लाभान्वित करवाया गया है।
6. औपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अन्तर्गत वर्ष 2001-02 से अब तक 186 पातशाला कमरों का निर्माण किया गया तथा 266.633 लाख रूपये व्यय किए गए हैं तथा 56 कमरे अभी तक निर्माणधीन हैं

हस्ताक्षर/-
परियोजना अधिकारी,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
चम्बा, हि0प्र0

हस्ताक्षर/-
उपायुक्त एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
चम्बा, हि0प्र0

सोलन जिले में जलागम विकास कार्यक्रम

मनुष्य की जीवन निर्वाह की समस्त आवश्यकताएं जमीन से पूरी होती हैं। जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि के साथ–साथ मनुष्य की जरूरतें भी बढ़ती जा रही हैं। इसके विपरीत जमीन सीमित होने के साथ–साथ इनके विभिन्न प्रकार के उपयोगों में बढ़ौतरी होने के कारण मनुष्य के जीवन निर्वाह के लिए उपयोग में आने वाली जमीन में निरन्तर कमी होती जा रही है। इसके अतिरिक्त सूखा–बाढ़ व भू–स्खलन इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं व वनस्पति के तेजी से हो रहे विनाश के कारण जमीन में नमी एवं जल–स्रोतों में जल की कमी से जमीन की उत्पादन शक्ति दिन–प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। प्राकृतिक व अप्राकृतिक कारणों से घट रही एवं बेकार हो रही जमीन से मनुष्य की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जाये, आज मानव समाज के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। जिसका एक ही समाधान नजर आता है कि जमीन को प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले विनाश से बचाया जाये। जल व भू के संरक्षण के उचित उपाय कर जमीन की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जाये व बेकार बंजर भूमि को भी मानव कल्याण के अधिकतम उपयोग में लाया जाये। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय, भू–संसाधन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा सोलन जिले के लिए सूखाग्रस्त कार्यक्रम के अन्तर्गत ३ करोड़ रूपये की लागत की एक और परियोजना वर्ष २००२–२००३ में विकास खण्ड धर्मपुर व कुनिहार के लिए स्वीकृत की है। यह परियोजना १० चयनित जलागम क्षेत्रों मे लागू की जा रही है। प्रत्येक वाटरशैड के अन्तर्गत ५०८–५०० हैक्टेयर भूमि उपचारित होगी।

सोलन जिले में जलागम दो विभिन्न कार्यक्रमों सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम ;क्तवनहीज च्तवदम तमं च्तवहतंउउम क्च्।च्द्ध व एकीकृत बंजर भूमि विकास परियोजना ;प्दजमतहतंजमक ॅंजमसंदक क्मअमसवचउमदज च्तवरमबजद्ध के अधीन भारत सरकार द्वारा वर्ष १९९५–९६ से लागू किया गया है। सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम ;क्च्।च्द्ध इस जिले के मात्र दो विकास खण्डों धर्मपुर एवं कुनिहार में लागू है जबकि एकीकृत बंजर भूमि विकास योजना अन्य तीन विकास खण्डों नालागढ़, सोलन एव कण्डाघाट में लागू है। इसके अतिरिक्त वर्ष २००३–०४ में भारत सरकार द्वारा सोलन जिले के विकास खण्ड नालागढ़ के लिए 'हरियाली' ;भ्ंतपलंसपद्ध नाम की एक ओर परियोजना मु० ३ करोड़ रूपये के लिए स्वीकृत की गई है जिसका कार्यान्वयन ८ चयनित वाटरशैडों में किया जा रहा है। उपरोक्त के अतिरिक्त हाल ही में भारत सरकार द्वारा वर्ष २००४–०५ के लिए सोलन जिले हेतू सूखाग्रस्त कार्यक्रम (DPAP) के अन्तर्गत ८ वाटरशैड मु० २ करोड ४० लाख रूपये की लागत के विकास खण्ड व कुनिहार के लिए स्वीकृत किये है। इन परियोजनाओं का संचालन डी.आर.डी.ए., सोलन द्वारा किया जा रहा है।

उद्देश्य : इस परियोजना के निम्न मुख्य उद्देश्य है :–

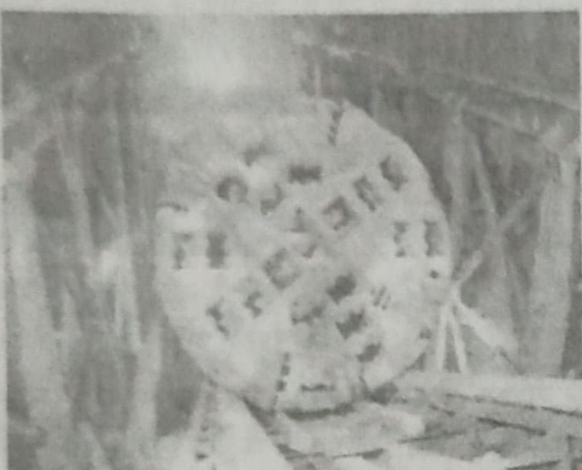
- भू व जल संरक्षण व पानी के स्त्रोतों का विकास।
- प्राकृतिक साधनों का विकास व अधिकतम उपयोग।
- वाटरशैड क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय लोगों को योजना बनाने और निर्णय लेने का अधिकार देकर इस कार्य को विकेन्द्रीत करना।
- मृदा एवं नमी संरक्षण उपाय जैसे भूमि को सीढ़ीदार बनाना, पुख्ता बनाना और वनस्पति अवरोधक लगाना इत्यादि।
- बहु–उपयोगी वृक्षों, झाड़ियों, घासों फलदार पौधों को उगाना और चारागाहो का विकास।
- भूमि का विकास करना।
- कृषि वानिकी और बागवानी को बढ़ावा देना।
- लकड़ी के विकल्प और ईंधन लकड़ी के संरक्षण के उपाय करना।
- निर्धन सम्पतिहीन विशेषकर महिलाओं एवं अनुसूचित जाति/जनजाति समुदाय से सम्बन्धित परिवारों के विकास पर ध्यान देना।

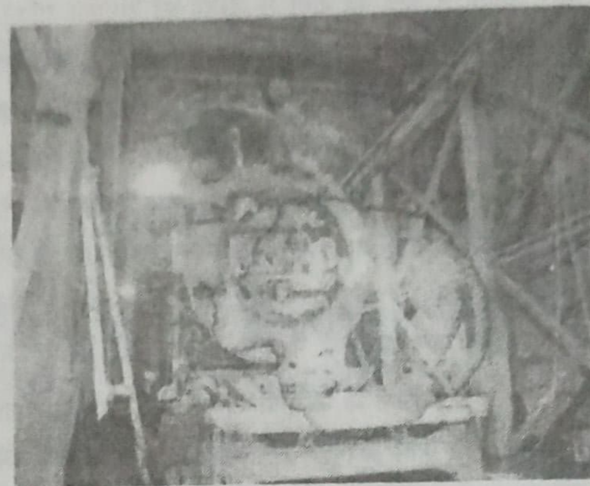
अधिकतम जानकारी के लिए स्थानीय खण्ड विकास अधिकारी या परियोजना अधिकारी, जिला ग्रामीण विकास अधिकरण, सोलन से सम्पर्क करें।

(राजेश कुमार)
उपायुक्त एवं मुख्यकार्यकारी अधिकारी,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, सोलन।

Inspired by Nature ....

When human ingenuity and commitment are blended with technology and responsibility towards the environment, a powerful partnership evolves.
And when this spirit of partnership is used to tap the forces of nature, it yields a source of energy that is clean, Cheap and inexhausible. Benefiting people, environment and the society.
A partnership like the one between Nature and NHPC





TBM INCLINED PRESSURE SHAFT

... Driven by Future

"Parbati Hyderelectric Project is a boon for the people of Kullu, the land of Goods."
We are committed to develop clean power by adoping the latest methodologies and technologies for speedy execution of Projects, with effective time-and-cost management. In order to achieve systematic development, in terms of world-class technology, human skills,NHPC is forging links with the best expertice in the world with one prime objective

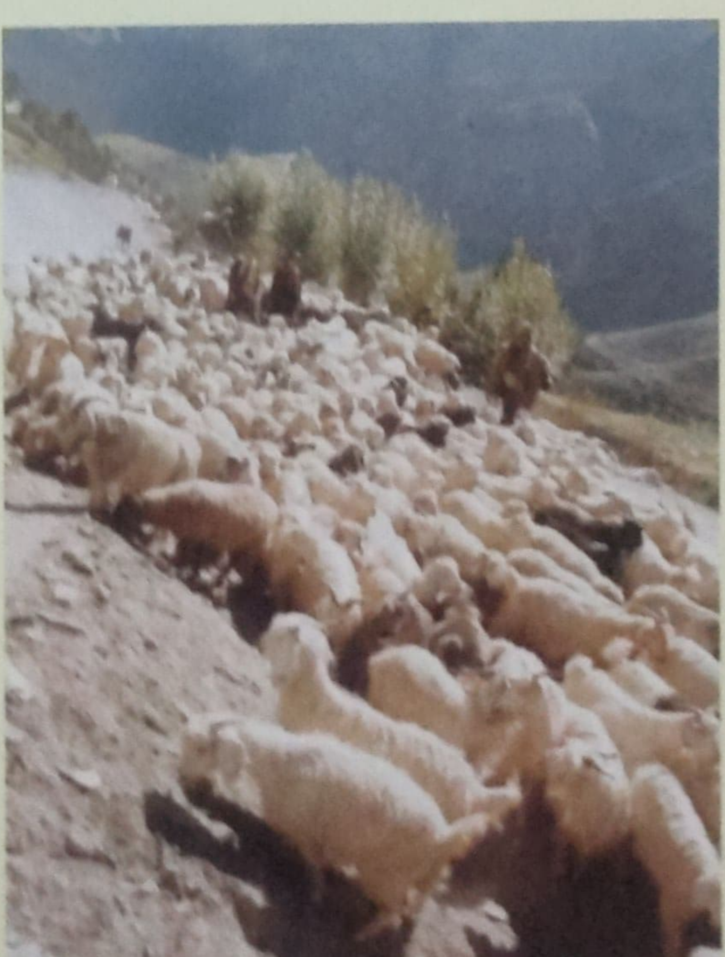
-to empoer people sustainably, naturally!

Parbati Hydroelectric Project, Stage-II (800MW)
Parbati Hydroelectric Project has been taken up for execution by NHPC *(an ISO 9001 & ISO 14000 certified organization)*, a Schedule "A" enterprise of Government of India.
The Construction of Project is going in full swing.
"On Completion Himachal Pradesh would be beneficiary of 12% free Power"

National Hydroelectri Power Corporation Ltd.
(A Government of India Enterprise)
Clean Power For Every Home
Project Office : Parbati Hydroelectric Project, Bhuntar, Distt. Kullu-175125 Himachal Pradesh



खंगसर (तोद) खर के छोर्तेन।



पारंपरिक रूप से निकट के जिलों से आने वाले गद्दी चरवाहे का एक झुण्ड।

मरुभूमि विकास परियोजना लाहौल एवं स्पिति

जल जंगल ज़मीन
बचेगा जीवन, बचे ये तीन।

मरुभूमि विकास परियोजना लाहौल एवं स्पिति में भारत सरकार के सौजन्य से 1–4–1995 से प्रारम्भ

मुख्य उद्देश्य–पारिस्थितिक संतुलन निर्माण

लोगों का– लोगों के लिए–लोगों के द्वारा

लोक समस्याओं के निवारण हेतू लोक सहभागी प्रयास, स्वाबलम्बी एवं चिरस्थायी विकास

कुल जलागम क्षेत्र –296

कुल परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी –08

क्र. स.	क्रियान्वयन एजेंसियों का नाम	चरण 1	चरण 5	चरण 6	चरण 7	चरण 8	चरण 9	चरण 10	हरियाली 1	कुल
1	ज़िला कृषि अधिकारी, केलंग	4	20	2	1	2	–	–	–	29
2	ज़िला उद्यान अधिकारी, केलंग	2	20	3	2	4	–	–	–	31
3	अधिशाषी अभियंता,(I & PH) केलंग	4	–	5	7	2	–	–	11	29
4	खण्ड विकास अधिकारी, केलंग	–	–	5	6	7	4	–	–	21
5	वन मण्डलाधिकारी, केलंग	13	–	5	9	3	3	–	–	33
6	उपमण्डलाधिकारी ना. उदयपुर	–	–	–	–	5	1	–	–	6
7	ज़िला ग्रामीण विकास अभिकरण, केलंग	1	–	–	–	–	7	15	–	24
8	अति. उपायुक्त काज़ा स्पिति	24	08	20	35	20	8	8	–	123
	कुल जलागम परियोजना	48	48	40	60	43	23	23	11	296

चरण–1 के अर्न्तगत 48 परियोजनाएं सितम्बर 2003 में समाप्त।

चरण–9 के अर्न्तगत 8 परियोजनाएं लाहौल विकास खण्ड में चयन किया जाना है।

चरण–10 के अर्न्तगत 23 परियोजनाएं दिसम्बर 2004 में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत किया गया, जिसका चयन किया जाना है।

कुल प्राप्ति–34.57 करोड़

कुल व्यय–29.92 करोड़

कुल मानव दिवस सृजित–14.13 लाख (श्रम दिवस) (फरवरी 2005 तक)

उपचारिक्ता क्षेत्र– विस्तृत क्षेत्र

1 सामुदायिक संगठन तथा प्रवेश बिन्दू 2. प्रशासनिक एवं प्रशिक्षण

3. भू संसाधन एवं जल संसाधन विकास 4. वनीकरण एवं चरागाह विकास

5. कृषि एवं उद्यान विकास6. नर्सरी उत्पादन।

सहयोग आपका विश्वास हमारा

डी0 डी0 पी0 का नारा स्वाबलम्बी लाहौल सारा

श्री रूप सिंह
परियोजना अधिकारी
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
लाहौल स्थान केलंग।

श्री विनय सिंह
परियोजना निदेशक,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
लाहौल स्थान केलंग

श्री पुष्पेन्द्र राजपूत, भा0 प्रा0 से0
उपायुक्त एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
जिला ग्रामीण विकास अभिकरण
लाहौल स्थान केलंग।